सितंबर, 2023

मेरी खेती

किसानों की बात मेरी खेती के साथ

किसान समाचार

खेत खलियान
सरकारी नीतियां
मौसम व अन्य कृषि सुझाव
सब्ज़ी
फूल
औषधीय खेती
पशुपालन - पशुचारा
प्रगतिशील किसान

MERIKHETI

विषय सूची

सम्पादकीय	
सलाहकार मंडल	
खेत खलियान	01-02
सब्ज़ी	03-06
फल	07
फूल	09
मशीनरी	10-12
मौसमी व अन्य कृषि सुझाव	13-16
सामान्य लेख	17-20
सरकारी नीतियां	21-30
किसान समाचार	31-40
औषधीय खेती	41-42
पशुपालन-पशुचारा	43-44
मिट्टी की सेहत - खाद	46-47
प्रगतिशील किसान	48-51

सम्पादकीय

बिहार के इस किसान ने आम की बागवानी आरंभ कर अपनी तकदीर बदल दी है। आज वह तकरीबन 20 लाख रुपये तक वार्षिक आमदनी कर रहे हैं। बिहार के सहरसा के जनपद के निवासी किसान संजय सिंह ने पारंपरिक खेती को छोड़ आम की बागवानी चालू की। आज वह प्रति वर्ष लगभग 20 लाख से अधिक आम का टर्नओवर कर रहे हैं। इसके पहले संजय सब्जियों की खेती किया करते थे। परंतु, उनके एक दोस्त की सलाह पर उन्होंने आम की बागवानी के विषय में सोचा और वह आज अपने क्षेत्र में लोगों के लिए एक मिशाल बन गए हैं।

संजय जी ने अपनी विरासत की भूमि पर आम के पौधों को लगाने के विषय में विचार किया। उन्होंने जनपद के कृषि विभाग से आम की नवीन प्रजातियों की खरीदारी की एवं जैविक तरीके से इसकी बुआई की। संजय का कहना है, कि शुरु में उन्हें काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। परंतु, परिवार की सहायता से उन्हें काफी हौसला मिला। वहीं, आज उनकी सफलता की कहानी सबको पता है। वह विगत 8 वर्षों से आम की बागवानी कर रहे हैं। पारंपरिक खेती के मुकाबले में बागवानी फसलों का उत्पादन करना काफी फायदेमंद होता है।

संजय सिंह का कहना है, कि आम की खेती से बेहतरीन आमदनी होने लगी। साथ ही, उनके घर की स्थिति भी अच्छी हो गई। पहले खेती से उनको कोई फायदा नहीं होता था। परंतु, अब वह काफी बेहतरीन आमदनी कर अपने परिवार की देख भाल कर रहे हैं।

किसान संजय सिंह का कहना है, कि उन्होंने शुरुआत में कुछ ही पेड़ों से आम का उत्पादन कर बेचना शुरु किया था। परंतु, मांग बढ़ने के उपरांत उन्होंने इसकी खेती बड़े पैमाने पर चालू की और इससे उनको आमदनी काफी ज्यादा होने लगी। वह इन आमों की बिक्री से प्रति वर्ष 20 लाख रुपये तक की आमदनी कर लेते हैं। संजय जी ने अपने खेतो में कुल 300 से ज्यादा आम के पेड़ लगा रखे हैं। आपको बतादें, एक आम के पौधे की कीमत 400 रुपये के आसपास थी। यह 5 से 6 वर्ष तक फल देने योग्य होता है।

-संपादक

दिलीप यादव

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक

डॉ. एमसी शर्मा,
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति
आईवीआरआई इज्जतनगर

प्रो. ए पी. सिंह
पूर्व कुलपति वेटरनरी विश्वविद्यालय
मथुरा

डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ वेटरनरी
एंड एनिमल साइंस

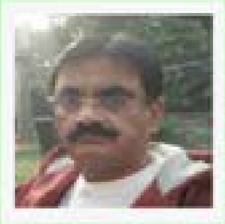

डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत्त)
उत्तर प्रदेश

डॉ. उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय कुम्हेर भरतपुर
राजस्थान

डॉ. जे.पी.एस. डबास
वरिष्ठ वैज्ञानिक
आई ए आर आई

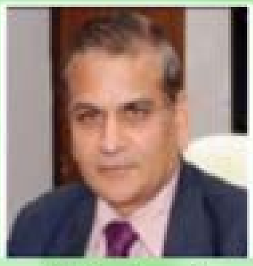

डॉ.हरी शंकर गौड़
साइंटिस्ट, गलगोटियास
विश्वविद्यालय

दिलीप यादव
विशेषज्ञ, मेरीखेती

तेजपाल सिंह
प्रगतिशील किसान

कृष्ण पाठक
विशेषज्ञ, मेरीखेती

Chana Jor
www.chanajor.com
SCAN ME!
TO DOWNLOAD
Download on the App Store
Enjoy Best Comedy Movies here.
Download now ChanaJor
GET IT ON Google Play

खीरे की इस किस्म की खेती कर वार्षिक चार बार पैदावार प्राप्त कर सकते हैं

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि पीसीयूएच प्रजाति के खीरे की खेती वर्ष भर में चार बार की जाती है। जानें इस खास किस्म के खीरे की खेती के बारे में। गर्मियों के दिनों में खीरे की बाजार में काफी ज्यादा मांग रहती है। ऐसी स्थिति में यदि आप अपने खेत में खीरे की खेती करते हैं, तो यह आपके लिए बेहद ही मुनाफे का सौदा साबित हो सकता है। बाजार में बहुत सारी किस्मों के खीरे उपलब्ध हैं। परंतु, आज हम आपको इस लेख में खीरे की एक ऐसे किस्म के संदर्भ में जानकारी देंगे, जिसकी खेती एक साल में चार बार की जा सकती है।

बाजार में पीसीयूएच किस्म का खास खीरा आया है। इसकी खेती वर्ष भर में चार बार की जाती है। हमारे किसान भाई इस किस्म के खीरे की खेती कर बेहद ही अच्छा मुनाफा अर्जित कर सकते हैं। इस प्रजाति के खीरे का उत्पादन आम खीरों के मुकाबले में अधिक होता है। इसकी खेती कर आप वार्षिक तौर पर बड़ी सुगमता से 2 से 3 लाख की आमदनी कर सकते हैं।

खीरे की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु व मृदा

इस खीरे का रेतीली मृदा में अच्छा उत्पादन होता है। इस खीरे की खेती के लिए मृदा का पीएच मान 6 से 7 के मध्य होना चाहिए। इसकी खेती के लिए थोड़े से गर्म तापमान की आवश्यकता होती है।

खेत की तैयारी किस प्रकार से करें

खीरे की बेहतरीन पैदावार के लिए खेत को दो से तीन बार जोतने के उपरांत उसपर पाटा चला कर समतल कर देना चाहिए। इसमें आप देशी खाद का ही इस्तेमाल करें। साथ ही, खेत में बिजाई से पूर्व फसल को कीटों एवं बीमारियों से बचाने के लिए बेहतरीन औषधियों का छिड़काव करें।

खीरे की खेती में सिंचाई किस प्रकार करें

खीरे की फसल को ज्यादा नमी की आवश्यकता पड़ती है। गर्मी के दिनों में फसल को प्रत्येक सप्ताह सिंचाई की आवश्यकता होती है। वर्षा ऋतु में आप बिना सिंचाई के बेहतरीन उपज प्राप्त कर सकते हैं।

खीरे की खेती में निराई-गुड़ाई

खीरे के खेत से खरपतवार अथवा अनावश्यक घास को हटाने के लिए खुरपी या फिर फावड़े का इस्तेमाल कर सकते हैं। ग्रीष्मकालीन समय में फसल में 20 से 25 दिनों के लिए 3 से 4 बार निराई-गुड़ाई का कार्य कर देना चाहिए। साथ ही, वर्षा के दौरान पानी की वजह से घास के जमने की आशंका ज्यादा हो जाती है। ऐसी स्थिति में गुड़ाई की बारंबारता काफी बढ़ जाती है।

गुलाबी फलों का उत्पादन कर किसान सेहत के साथ साथ कमाऐं मुनाफा

गुलाबी रंग के फल हमारे शरीर के लिए काफी लाभकारी होते हैं। आज हम आपको कुछ ऐसे ही फलों के विषय में बताने जा रहे हैं। गुलाबी खाद्य पदार्थ, एंथोसायनिन और बीटालेंस जैसे पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं। यह हमारे शरीर में एंटीऑक्सिडेंट का कार्य करते हैं, जो प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत करते हैं। हम अपनी थाली में कई तरह के फलों और सब्जियों का उपयोग करते हैं। परंतु, गुलाबी रंग के खाद्य पदार्थ हमारे शरीर के लिए बेहद ही लाभकारी होता है।

ऐसे में आज हम आपको गुलाबी रंग के कुछ फलों के विषय में जानकारी देने जा रहे हैं, जो हमारे शरीर की उत्तम सेहत के लिए आवश्यक होता है। प्राकृतिक रूप से गुलाबी खाद्य पदार्थों में एंथोसायनिन और बीटालेन, फ्लेवोनोइड और एंटीऑक्सिडेंट युक्त यौगिक शम्मिलित होते हैं, जो शरीर को कई प्रकार की बीमारियों से सुरक्षा करता है।

गुलाबी फलों का उत्पादन

चुकंदर

चुकंदर हमारे शरीर का रक्त परिसंचरण को बढ़ाने, रक्तचाप को सुदृढ़ रखने में सहायता करता है। कच्चे चुकंदर के रस का सेवन, सलाद एवं सब्जी के रूप में उपयोग करना चाहिए। यह हमारे शरीर के लिए जरूरी विटामिन, खनिज एवं फोलेट की मात्रा की पूर्ति करता है। इसके अलावा चुकंदर में एंटीऑक्सिडेंट पाए जाते हैं जो कैंसर-रोधी गुणों के लिए जाने जाते हैं।

अनार

अनार का सेवन हमारी रक्त शर्करा और रक्तचाप को नियंत्रित करता है। यह हमारी पाचन संबंधी समस्याओं के लिए भी लाभदायक होता है। इसके अलावा इन फलों में एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण विघमान होते हैं, जो हमें रोगों से बचाता है। अनार का जूस मूत्र संक्रमण के लिए एक निवारक का कार्य करता है।

ड्रैगन फ्रूट

यह अनोखा आकर्षक उष्णकटिबंधीय फल है, इसका सेवन हमारी मधुमेह और कैंसर जैसी बीमारियों से रक्षा करता है। आहार में ड्रैगन फ्रूट को शम्मिलित करने से यह हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली को अच्छा बनाता है। साथ ही, हृदय से जुड़ी बीमारियों के लिए भी अच्छा माना जाता है।

बैंगनी पत्तागोभी

यह रंगीन पत्तेदार हरी पत्तागोभी एंटीऑक्सीडेंट का एक शक्तिशाली भंडार होती है, जो हमारे शरीर की सेलुलर क्षति के विरुद्ध एक प्रभावी सुरक्षा प्रदान करती है। इसमें विघमान विटामिन सी एवं कैरोटीन की भरपूर मात्रा के साथ-साथ पर्याप्त फाइबर भी मौजूद होता है, जो हमारे शरीर की प्रतिरक्षा करता है।

लीची

लीची तांबा, लोहा, मैग्नीशियम और फॉस्फोरस जैसे खनिज तत्वों से भरपूर होती है। यह हमारे शरीर की हड्डियों को शक्ति प्रदान करता है। यह मोतियाबिंद, मधुमेह, तनाव एवं हृदय रोगों से भी शरीर को सुरक्षा प्रदान करते हैं।

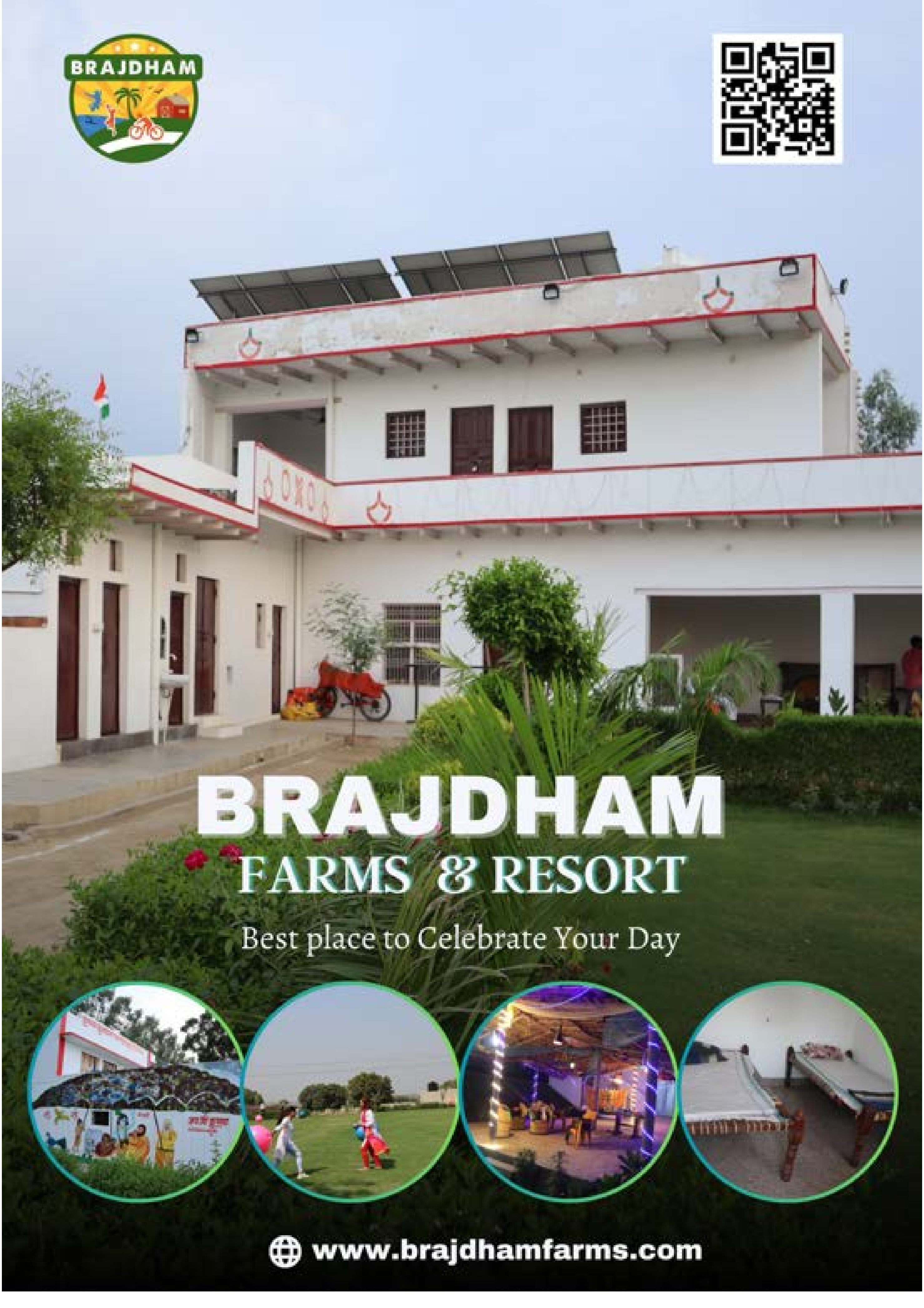
BRAJDHAM
BRAJDHAM
FARMS & RESORT
Best place to Celebrate Your Day
www.brajdhamfarms.com

मटर की खेती से संबंधित अहम पहलुओं की विस्तृत जानकारी

मटर की खेती सामान्य तौर पर सर्दी में होने वाली फसल है। मटर की खेती से एक अच्छा मुनाफा तो मिलता ही है। साथ ही, यह खेत की उर्वराशक्ति को भी बढ़ाता है। इसमें उपस्थित राइजोबियम जीवाणु भूमि को उपजाऊ बनाने में मदद करता है। अगर मटर की अगेती किस्मों की खेती की जाए तो ज्यादा उत्पादन के साथ भूरपूर मुनाफा भी प्राप्त किया जा सकता है। इसकी कच्ची फलियों का उपयोग सब्जी के रुप में उपयोग किया जाता है. यह स्वास्थ्य के लिए भी काफी फायदेमंद होती है. पकने के बाद इसकी सुखी फलियों से दाल बनाई जाती है.

मटर की खेती

मटर की खेती सब्जी फसल के लिए की जाती है। यह कम समयांतराल में ज्यादा पैदावार देने वाली फसल है, जिसे व्यापारिक दलहनी फसल भी कहा जाता है। मटर में राइजोबियम जीवाणु विघमान होता है, जो भूमि को उपजाऊ बनाने में मददगार होता है। इस वजह से मटर की खेती भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए भी की जाती है। मटर के दानों को सुखाकर दीर्घकाल तक ताजा हरे के रूप में उपयोग किया जा सकता है। मटर में विभिन्न प्रकार के पोषक तत्व जैसे कि विटामिन और आयरन आदि की पर्याप्त मात्रा मौजूद होती है। इसलिए मटर का सेवन करना मानव शरीर के लिए काफी फायदेमंद होता है।
मटर को मुख्यतः सब्जी बनाकर खाने के लिए उपयोग में लाया जाता है। यह एक द्विबीजपत्नी पौधा होता है, जिसकी लंबाई लगभग एक मीटर तक होती है। इसके पौधों पर दाने फलियों में निकलते हैं। भारत में मटर की खेती कच्चे के रूप में फलियों को बेचने तथा दानो को पकाकर बेचने के लिए की जाती है, ताकि किसान भाई ज्यादा मुनाफा उठा सकें। अगर आप भी मटर की खेती से अच्छी आमदनी करना चाहते है, तो इस लेख में हम आपको मटर की खेती कैसे करें और इसकी उन्नत प्रजातियों के बारे में बताऐंगे।

मटर उत्पादन के लिए उपयुक्त मृदा, जलवायु एवं तापमान

मटर की खेती किसी भी प्रकार की उपजाऊ मृदा में की जा सकती है। परंतु, गहरी दोमट मृदा में मटर की खेती कर ज्यादा उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त क्षारीय गुण वाली भूमि को मटर की खेती के लिए उपयुक्त नहीं माना जाता है। इसकी खेती में भूमि का P.H. मान 6 से 7.5 बीच होना चाहिए।

समशीतोष्ण और उष्णकटिबंधीय जलवायु मटर की खेती के लिए उपयुक्त मानी जाती है। भारत में इसकी खेती रबी के मौसम में की जाती है। क्योंकि ठंडी जलवायु में इसके पौधे बेहतर ढ़ंग से वृद्धि करते हैं तथा सर्दियों में पड़ने वाले पाले को भी इसका पौधा सहजता से सह लेता है। मटर के पौधों को ज्यादा वर्षा की जरूरत नहीं पड़ती और ज्यादा गर्म जलवायु भी पौधों के लिए अनुकूल नहीं होती है। सामान्य तापमान में मटर के पौधे बेहतर ढ़ंग से अंकुरित होते हैं, किन्तु पौधों पर फलियों को बनने के लिए कम तापमान की जरूरत होती है। मटर का पौधा न्यूनतम 5 डिग्री और अधिकतम 25 डिग्री तापमान को सहन कर सकता है।

मटर की उन्नत प्रजातियां

आर्केल

आर्केल किस्म की मटर को तैयार होने में 55 से 60 दिन का वक्त लग जाता है। इसका पौधा अधिकतम डेढ़ फीट तक उगता है, जिसके बीज झुर्रीदार होते हैं। मटर की यह प्रजाति हरी फलियों और उत्पादन के लिए उगाई जाती है। इसकी एक फली में 6 से 8 दाने मिल जाते हैं।

लिंकन

लिंकन किस्म की मटर के पौधे कम लम्बाई वाले होते हैं, जो बीज रोपाई के 80 से 90 दिन उपरांत पैदावार देना शुरू कर देते हैं। मटर की इस किस्म में पौधों पर लगने वाली फलियाँ हरी और सिरे की ऊपरी सतह से मुड़ी हुई होती है। साथ ही, इसकी एक फली से 8 से 10 दाने प्राप्त हो जाते हैं। जो स्वाद में बेहद ही अधिक मीठे होते हैं। यह किस्म पहाड़ी क्षेत्रों में उगाने के लिए तैयार की गयी है।

बोनविले

बोनविले मटर की यह किस्म बीज रोपाई के लगभग 60 से 70 दिन उपरांत पैदावार देना शुरू कर देती है। इसमें निकलने वाला पौधा आकार में सामान्य होता है, जिसमें हल्के हरे रंग की फलियों में गहरे हरे रंग के बीज निकलते हैं। यह बीज स्वाद में मीठे होते हैं। बोनविले प्रजाति के पौधे एक हेक्टेयर के खेत में तकरीबन 100 से 120 क्विंटल की उपज दे देते है, जिसके पके हुए दानो का उत्पादन लगभग 12 से 15 क्विंटल होता है।

मालवीय मटर – 2

मटर की यह प्रजाति पूर्वी मैदानों में ज्यादा पैदावार देने के लिए तैयार की गयी है। इस प्रजाति को तैयार होने में 120 से 130 दिन का वक्त लग जाता है। इसके पौधे सफेद फफूंद और रतुआ रोग रहित होते हैं, जिनका प्रति हेक्टेयर उत्पादन 25 से 30 क्विंटल के आसपास होता है।

पंजाब 89

पंजाब 89 प्रजाति में फलियां जोड़े के रूप में लगती हैं। मटर की यह किस्म 80 से 90 दिन बाद प्रथम तुड़ाई के लिए तैयार हो जाती है, जिसमें निकलने वाली फलियां गहरे रंग की होती हैं तथा इन फलियों में 55 फीसद दानों की मात्रा पाई जाती है। यह किस्म प्रति हेक्टेयर के हिसाब से 60 क्विंटल का उत्पादन दे देती है।

पूसा प्रभात

मटर की यह एक उन्नत क़िस्म है, जो कम समय में उत्पादन देने के लिए तैयार की गई है | इस क़िस्म को विशेषकर भारत के उत्तर और पूर्वी राज्यों में उगाया जाता है। यह क़िस्म बीज रोपाई के 100 से 110 दिन पश्चात् कटाई के लिए तैयार हो जाती है, जो प्रति हेक्टेयर के हिसाब से 40 से 50 क्विंटल की पैदावार दे देती है।

पंत 157

यह एक संकर किस्म है, जिसे तैयार होने में 125 से 130 दिन का वक्त लग जाता है। मटर की इस प्रजाति में पौधों पर चूर्णी फफूंदी और फली छेदक रोग नहीं लगता है। यह किस्म प्रति हेक्टेयर के हिसाब से 70 क्विंटल तक की पैदावार दे देती है।

मटर उत्पादन के लिए खेत की तैयारी किस प्रकार करें

मटर उत्पादन करने के लिए भुरभुरी मृदा को उपयुक्त माना जाता है। इस वजह से खेत की मिट्टी को भुरभुरा करने के लिए खेत की सबसे पहले गहरी जुताई कर दी जाती है। दरअसल, ऐसा करने से खेत में उपस्थित पुरानी फसल के अवशेष पूर्णतय नष्ट हो जाते हैं। खेत की जुताई के उपरांत उसे कुछ वक्त के लिए ऐसे ही खुला छोड़ दिया जाता है, इससे खेत की मृदा में सही ढंग से धूप लग जाती है। पहली जुताई के उपरांत खेत में 12 से 15 गाड़ी पुरानी गोबर की खाद को प्रति हेक्टेयर के मुताबिक देना पड़ता है।

मटर के पौधों की सिंचाई कब और कितनी करें

मटर के बीजों को नमी युक्त भूमि की आवश्यकता होती है, इसके लिए बीज रोपाई के शीघ्र उपरांत उसके पौधे की रोपाई कर दी जाती है। इसके बीज नम भूमि में बेहतर ढंग से अंकुरित होते हैं। मटर के पौधों की पहली सिंचाई के पश्चात दूसरी सिंचाई को 15 से 20 दिन के समयांतराल में करना होता है। तो वहीं उसके उपरांत की सिंचाई 20 दिन के उपरांत की जाती है।

मटर के पौधों पर खरपतवार नियंत्रण किस प्रकार करें

मटर के पौधों पर खरपतवार नियंत्रण के लिए रासायनिक विधि का उपयोग किया जाता है। इसके लिए बीज रोपाई के उपरांत लिन्यूरान की समुचित मात्रा का छिड़काव खेत में करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त अगर आप प्राकृतिक विधि का उपयोग करना चाहते हैं, तो उसके लिए आपको बीज रोपाई के लगभग 25 दिन बाद पौधों की गुड़ाई कर खरपतवार निकालनी होती है। इसके पौधों को सिर्फ दो से तीन गुड़ाई की ही आवश्यकता होती है। साथ ही, हर एक गुड़ाई 15 दिन के समयांतराल में करनी होती है।

सेवानिवृत फौजी महज 8 कट्ठे में सब्जी उत्पादन कर प्रति माह लाखों की आय कर रहा है

राजेश कुमार का कहना है, कि उन्होंने वीएनआर सरिता प्रजाति के कद्दू की खेती की है। बुवाई करने के एक माह के उपरांत इसकी पैदावार शुरू हो गई। नौकरी से सेवानिवृत होने के उपरांत अधिकतर लोग विश्राम करना ज्यादा पसंद करते हैं। उनकी यही सोच रहती है, कि पेंशन के सहयोग से आगे की जिन्दगी आनंद और मस्ती में ही जी जाए। परंतु, बिहार में सेना के एक जवान ने रिटायरमेंट के उपरांत कमाल कर डाला है। उसने गांव में आकर हरी सब्जियों की खेती चालू कर दी है। इससे उसको पूर्व की तुलना में अधिक आमदनी हो रही है। वह वर्ष में सब्जी बेचकर लाखों रुपये की आमदनी कर रहे हैं।

राजेश कुमार पूर्वी चम्पारण की इस जगह के निवासी हैं

सेवानिवृत फौजी पूर्वी चम्पारण जनपद के पिपरा कोठी प्रखंड मोजूद सूर्य पूर्व पंचायत के निवासी हैं। उनका नाम राजेश कुमार है, उन्होंने रिटायरमेंट लेने के पश्चात विश्राम करने की बजाए खेती करना पसंद किया। जब उन्होंने खेती आरंभ की तो गांव के लोगों ने उनका काफी मजाक उड़ाया। परंतु, राजेश ने इसकी परवाह नहीं की और अपने कार्य में लगे रहे। परंतु, जब मुनाफा होने लगा तो समस्त लोगों की बोलती बिल्कुल बंद हो गई।

कद्दू की बिक्री करने हेतु बाहर नहीं जाना पड़ता

विशेष बात यह है, कि राजेश कुमार को अपने उत्पाद की बिक्री करने के लिए बाजार में नहीं जाना पड़ता है। व्यापारी खेत से आकर ही सब्जियां खरीद लेते हैं। सीतामढ़ी, शिवहर, गोपालगंज और सीवान से व्यापारी राजेश कुमार से सब्जी खरीदने के लिए उनके गांव आते हैं।

कद्दू की खेती ने किसान को बनाया मालामाल

किसान राजेश कुमार की मानें तो 8 कट्ठा भूमि में कद्दू की खेती करने पर 10 से 20 हजार रुपये की लागत आती थी। इस प्रकार उनका अंदाजा है, कि लागत काटकर इस माह वह 1.30 लाख रुपये का मुनाफा हांसिल कर लेंगे।

किसान राजेश ने 8 कट्ठे खेत में कद्दू का उत्पादन किया है

विशेष बात यह है, कि पूर्व में राजेश कुमार ने प्रयोग के रूप में पपीता की खेती चालू की थी। प्रथम वर्ष ही उन्होंने पपीता विक्रय करके साढ़े 12 लाख रुपये की आमदनी कर डाली। इसके पश्चात सभी लोगों का मुंह बिल्कुल बंद हो गया। मुनाफे से उत्साहित होकर उन्होंने आगामी वर्ष से केला एवं हरी सब्जियों की भी खेती शुरू कर दी। इस बार उन्होंने 8 कट्ठे भूमि में कद्दू की खेती चालू की है। वह 300 कद्दू प्रतिदिन बेच रहे हैं, जिससे उनको 4 से 5 हजार रुपये की आय अर्जित हो रही है। इस प्रकार वह महीने में डेढ़ लाख रुपये के आसपास आमदनी कर रहे हैं।

विश्व की सर्वाधिक तीखी लाल मिर्च, जो केवल भारत में ही उगाई जाती है

आमतौर पर सामान्य मिर्च में तीखेपन का स्तर 2500-5000 एसएचयू होता है। परंतु, भूत झोलकिया मिर्च में तीखेपन का स्तर 10,41,427 एसएचयू पाया जाता है।

भारत के अंदर महंगाई ने हड़कंप मचा के रखा है। गेहूं, आटा, चावल, दाल, दूध और दही समेत समस्त प्रकार के खाद्य पदार्थ महंगे हो गए हैं। परंतु, आम जनता को सबसे ज्यादा मसालों की बढ़ती कीमतें रूला रही हैं। विगत कुछ माहों में मसाले दोगुना से भी अधिक महंगे हो गए हैं। विशेष कर जीरा 1200 से 1400 रुपये किलो बिक रहा है। इसी प्रकार लाल मिर्च की कीमतें भी काफी महंगी हो गई हैं। यह 400 रुपये किलो हो गई है। वहीं, विगत वर्ष तक इसकी कीमत 100 रुपये किलो ही थी। परंतु, आज हम एक ऐसी लाल मिर्च के संबंध में बात करेंगे, जिसकी गिनती दुनिया की सबसे तीखी मिर्च में होती है। साथ ही, इसका भाव भी हजारों रुपये किलो है।

भूत जोलोकिया विश्व की सबसे तीखी मिर्च है

वास्तव में हम बात कर रहे हैं 'भूत जोलोकिया' के विषय में। कहा जाता है, कि यह विश्व की सबसे तीखी लाल मिर्च है। इसकी बस एक बाइट खाते ही कान से धुंआ निकलना शुरू हो जाता है। साथ ही, इसकी कीमत सुनकर आपका दिमाग भी घूम जाएगा। मुख्य बात यह है, कि 'भूत जोलोकिया' की खेती केवल भारत के अंदर ही की जाती है। नागालैंड के पहाड़ी क्षेत्रों में ही किसान इसकी खेती करते हैं। भूत जोलोकिया अपने तीखेपन की वजह से संपूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है। इसका नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में भी दर्ज है।

भूत जोलोकिया मिर्च की लंबाई कितने सेंटीमीटर तक होती है

यह लाल मिर्च की ऐसी किस्म है, जो कि बेहद कम वक्त में तैयार हो जाती है। इसके पौधों की रोपाई करने के मात्र 90 दिनों के उपरांत ही फसल पूर्णतय तैयार हो जाती है। मतलब कि आप भूत जोलोकिया के पौधों से खाने हेतु लाल मिर्च तोड़ सकते हैं। आमतौर पर भूत जोलोकिया सामान्य लाल मिर्च के तुलनात्मक लंबाई में छोटी होती है। इसकी लंबाई 3 सेंटीमीटर तक रहती है, वहीं चौड़ाई 1 से 1. 2 सेंटीमीटर तक होती है।

भूत जोलोकिया में तीखेपन का स्तर कितने एसएचयू पाया गया है

भूत जोलोकिया' से पेपर स्प्रे भी तैयार किया जाता है, जिसे महिलाएं अपने साथ सुरक्षा के उद्देश्य से रखती हैं। खतरे का अनुमान होने पर महिलाएं पेपर स्प्रे रिलीज कर देती हैं। इससे लोगों के गले एवं आंखों में जलन होने लग जाती है। नागालैंड में किसान इसकी बड़े पैमाने पर खेती करते हैं। यदि आप चाहें तो घर के अंदर गमले में भी इसकी खेती कर सकते हैं। इसे घोस्ट चिली, नागा झोलकिया अथवा घोस्ट पेपर के नाम से भी जाना जाता है।

भूत जोलोकिया का कितना भाव है

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि वर्ष 2008 में भूत जोलोकिया को जीआई टैग प्रदान किया गया था। साथ ही, वर्ष 2021 में जोलोकिया मिर्च का भारत से लंदन में निर्यात किया गया था। विशेष बात यह है, कि भूत जोलोकिया सामान्य लाल मिर्च की अपेक्षा काफी महंगी बिकती है। वर्तमान में ऑनलाइन शॉपिंग साइट अमेजन पर 100 ग्राम भूत जोलोकिया मिर्च का भाव 698 रुपये है। इस प्रकार एक किलो भूत जोलोकिया का भाव 6980 रुपये हो गया।

फल

अमरूद की इन किस्मों की करें खेती, होगी बम्पर कमाई

भारत में अमरूद एक पसंदीदा फल है। जिसे लोग बेहद चाव के साथ खाते हैं। यह मिनरल्स और विटामिन से भरपूर होता है। इसकी पैदावार मुख्यतः सर्दियों के मौसम में होती है, लेकिन अब ऐसी किस्में में आ गई हैं जिससे बाजार में हर मौसम में अमरूद उपलब्ध होता है। अमरूद में प्रचुर मात्रा में फाइबर पाया जाता है, जिससे लोग उत्तम स्वास्थ्य के लिए इस फल का सेवन करना पसंद करते हैं। बाजार में अमरूद के अच्छे खासे दाम मिल जाते हैं, ऐसे में किसान भाई अमरूद की खेती करके कम समय में ही अच्छी खासी कमाई कर सकते हैं।

अमरूद एक बागवानी फसल है। इससे जैम, जैली, नेक्टर आदि परिरक्षित पदार्थ तैयार किये जाते है। इसकी पौष्टिकता को ध्यान मे रखते हुये लोग इसे गरीबों का सेब कहते हैं। यह स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभदायक होता है। इसमें विटामिन सी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

अमरूद की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु

अमरूद की खेती उष्ण कटीबंधीय और उपोष्ण-कटीबंधीय जलवायु में बेहद आसानी से की जा सकती है। उष्ण क्षेत्रों में तापमान व नमी की पर्याप्त मात्रा उपलब्धता रहती है, जिसके कारण अमरूद के पेड़ों पर साल भर फल लगते हैं और किसान भाई हर मौसम में अमरूद की फसल प्राप्त कर सकते हैं। अमरूद के पेड़ 44 डिग्री सेल्सियस तक का तापमान बेहद आसानी से सहन कर सकते हैं। ज्यादा वर्षा वाले क्षेत्र अमरूद की खेती के लिए उपयुक्त नहीं माने गए हैं। ज्यादा वर्षा के कारण अमरूद के पौधे सड़ जाते हैं। इसकी खेती के लिए गर्म तथा शुष्क जलवायु सबसे अच्छी मानी जाती है। ज्यादा ठंड से कई बार अमरूद के पौधों पर नकारात्मक असर देखा गया है। कई बार भीषण ठंड में अमरूद के पौधों में पाला लग जाता है। इसके विपरीत अमरूद के पेड़ कड़ाके की ठंड भी झेल सकते हैं, बड़े पेड़ों पर ठंड का कोई खास असर नहीं होता है।

भूमि का चयन एवं तैयारी

अमरूद का पेड़ हर प्रकार की भूमि में आसानी से उग सकता है। लेकिन यदि बलुई दोमट मिट्टी में इसकी खेती की जाए तो इससे उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। अगर खेती के लिए बलुई दोमट मिट्टी का चयन किया गया है तो उसका पीएच मान 4.2 होना चाहिए। वहीं अगर अमरूद के पौधे लगाने के लिए चूनायुक्त भूमि का चुनाव किया गया है तो पीएच मान 8.2 होना चाहिए।

खेत तैयार करने के पहले दो से तीन बार अच्छे से जुताई कर लें। इसके बाद खेत में 15 गाड़ी प्रति एकड़ के हिसाब से सड़ी हुई खाद या कंपोस्ट डालें। इसके बाद खेत में 2 फीट व्यास के 8-10 सेंटीमीटर गहरे गड्ढे तैयार कर लें। गड्ढों की दूरी 20 फीट होनी चाहिए।

अमरूद की उपलब्ध प्रजातियां और किस्में

बाजार में अमरूद की कई प्रजातियां उपलब्ध हैं, जिनकी खेती किसान भाई करते हैं। लेकिन इन दिनों इलाहाबादी सफेदा, सरदार 49 लखनऊ, सेबनुमा अमरूद, इलाहाबादी सुरखा, बेहट कोकोनट आदि प्रजातियां किसानों की पहली पसंद हैं। इसके अलावा चित्तीदार, रेड फ्लेस्ड, ढोलका, नासिक धारदार आदि किस्मों की खेती भी बहुतायत में की जाती है।

syngenta
EVERYONE HAS A RIGHT TO EAT HEALTHY
Evicent
syngenta
Chess
Rifit Plus
Amistar Top
Calaris Xtra
Virtako
Virtako
Axial
Ampligo

कमल की नवीन किस्म नमो 108 का हुआ अनावरण, हर समय खिलेंगे फूल

एनबीआरआई परिसर में कमल की नवीन वैरायटी नमो-108 का अनावरण किया। साथ ही, इस समारोह में लोटस मिशन का भी लॉन्च किया गया। केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) एवं साथ ही पीएमओ, कार्मिक, लोक शिकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने शनिवार के दिन 108 पंखुड़ियों वाले कमल के फूल की एक उल्लेखनीय नवीन किस्म का अनावरण किया। ऐसा कहा जा रहा है, कि यह किस्म वनस्पति अनुसंधान के क्षेत्र में बेहद महत्वपूर्ण विकास है।

'नमो 108' कमल पोषक तत्व सामग्री से युक्त है

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि यह अनावरण समारोह एनबीआरआई परिसर में हुआ, जहां डॉ. जितेंद्र सिंह ने कमल के फूल एवं संख्या 108 दोनों के धार्मिक और प्रतीकात्मक महत्व पर बल दिया। इस दौरान उन्होंने बताया कि दोनों तत्वों के इस संलयन ने नई किस्म को एक विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण पहचान अदा की है। 'नमो 108' कमल की किस्म मार्च से दिसंबर तक की समयांतराल तक फूलने की अवधि का दावा करती है। साथ ही, यह पोषक तत्व सामग्री की खासियत से युक्त है।

कमल के क्या-क्या उत्पाद हैं

बतादें, कि इस अवसर पर 'नमो-108' कमल किस्म से प्राप्त उत्पादों की एक श्रृंखला भी जारी की गई। इन उत्पादों में कमल के रेशे से निर्मित परिधान एवं 'फ्रोटस' नामक इत्र आदि शम्मिलित हैं, जो कमल के फूलों से निकाला जाता है। इन उत्पादों का विकास एफएफडीसी, कन्नौज की सहायता से आयोजित लोटस रिसर्च प्रोग्राम का हिस्सा था।

दरअसल, इस विशिष्ट कमल किस्म को 'नमो- 108' नाम देने के लिए सीएसआईआर-एनबीआरआई की तारीफ करते हुए, डॉ. जितेंद्र सिंह ने इसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्थायी समर्पण एवं सहज सुंदरता के रूप में देखा। बतादें, कि यह अनावरण प्रधानमंत्री मोदी के कार्यकाल के दसवें वर्ष के साथ हुआ, जिससे इस अवसर पर स्मरणोत्सव की भी भावना जुड़ गई।

लोटस मिशन के अनावरण को चिह्नित किया गया है

कार्यक्रम के दौरान 'लोटस मिशन' के अनावरण को चिह्नित किया, जो कि लोटस-आधारित उत्पादों एवं अनुप्रयोगों के क्षेत्र में अनुसंधान और नवाचार को आगे बढ़ाने के मकसद से एक व्यापक कोशिश है। डॉ. जितेंद्र सिंह ने विभिन्न क्षेत्रों में विकास को प्रोत्साहन देने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता पर रौशनी डालते हुए इस मिशन की तुलना बाकी प्राथमिकता वाली योजनाओं से की है। उन्होंने इस बात पर विशेष बल दिया कि, प्रधानमंत्री मोदी के मार्गदर्शन में लोटस मिशन जैसी अहम कवायद की प्रभावशीलता एवं प्रभाव सुनिश्चित करने के लिए सावधानीपूर्वक योजना तैयार की गई थी।

अनावरणों में डॉ. जितेंद्र सिंह ने मंदिरों में चढ़ाए गए फूलों से निकाले गए हर्बल रंगों को प्रस्तुत किया। इन सब हर्बल रंगों के विविध अनुप्रयोग हैं, जिनमें रेशम एवं सूती कपड़ों की रंगाई भी शम्मिलित है। इसके अतिरिक्त 'एनबीआरआई-निहार' ('NBRI-NIHAR') नामक एलोवेरा की एक नवीन प्रजाति पेश की गई, जिसमें नियमित एलोवेरा उपभेदों के मुकाबले काफी ज्यादा जेल पैदा होती है। इस किस्म ने बैक्टीरिया फंगल रोगों के विरुद्ध भी लचीलापन प्रदर्शित किया है।

किसान के बेटे ने बनाई मिल्क एटीएम मशीन, जानिए इस दूध एटीएम मशीन की खासियतें

अब तक आप लोगों ने वॉटर एटीएम मशीन देखी थी। परंतु, अब एक किसान के बेटे ने मिल्क एटीएम मशीन तैयार की है, जिसकी सहायता से वह प्रति दिन आमदनी कर रहा है। हमारे भारत में सामान्यतः डेबिट कार्ड का उपयोग पैसे निकालने अथवा फिर बाजार में बाकी विभिन्न प्रकार के उत्पाद खरीदने के लिए किया जाता है। परंतु, अब से भारत के कुछ राज्यों में डेबिट कार्ड का इस्तेमाल बाकी कार्यों में भी किया जाएगा। इसकी शुरुआत मध्य प्रदेश ने कर दी है। दरअसल, MP के बैतूल में कार्ड से लोगों को दूध दिया जा रहा है।

जानकारी के लिए बतादें, कि बैतूल के एक किसान के बेटे ने डेबिट कार्ड की मदद से मिलने वाली दूध की मशीन तैयार की है। किसान के इस बेटे का नाम रोहित यादव है, जिसने दूध बेचने के लिए एक चलती फिरती दूध एटीएम मशीन बनाई है। चलिए इस मशीन की विशेषताओं के विषय में थोड़ा विस्तार से जानने का प्रयास करते हैं।

दूध ATM मशीन की विशेषताऐं

- किसान के बेटे के द्वारा तैयार की गई यह दूध मशीन जो एटीएम की सहायता से लोगों को स्वच्छ दूध मुहैय्या करवाती है।
- यह मशीन लोगों को उनके घर जाकर दूध देती है।
- इससे रोहित प्रतिदिन करीब 500 लीटर तक दूध बेचता है।
- बाजार में मिलने वाले प्रति लीटर दूध से रोहित 2 रुपए ज्यादा कीमत पर घर पर ही दूध देता है।
- एटीएम मशीन का यह दूध प्लांट से चिल्ड होता है।
- इस मशीन के द्वारा ग्राहकों को उचित दाम पर बेहतर गुणवत्ता का दूध मिलता है।

दूध बेचने की एटीएम मशीन क्यों तैयार की

रोहित 24 वर्ष आयु का युवक है, जिसने बीएससी की पढ़ाई की है। जिसके पश्चात वह दूध बेचने के लिए नवीन प्रकार के आइडिये की खोज जुट गया। क्योंकि, वह कमाई के साथ लोगों का भी हित कर सके। ऐसे में उसे वॉटर एटीएम मशीन का आईडिया आया और उसके बाद परिवार की सहायता से उसने एक मिल्क एटीएम को सफलतापूर्वक तैयार कर लिया, जो वाटर एटीएम मशीन की भांति कार्य करती है। इस मशीन की मदद से रोहित घर–घर लोगों को दूध की सुविधा मुहैय्या करवाने लगा। मिली जानकारी के अनुसार, रोहित ने इस मशीन के लिए उद्यम क्रांति योजना से कर्जा लिया और फिर लगभग तीन मिल्क एटीएम तैयार किए।

रोहित को अपने दादा से आईडिया आया था

रोहित को जब भी वक्त मिलता था। वह अपने दादा के साथ दूध बेचने में सहयोग करता था। रोहित के दादा की दूध की डेयरी थी। जहां वह अपने दादा के साथ दूध के प्लांट पर अक्सर दूध बेचने जाया करता था। इसी के चलते रोहित के दिमाग में आया कि वह स्वयं का अपना एक अच्छा व्यवसाय शुरू करेगा, जो बाकी लोगों से काफी हटकर होगा। इसी के चलते रोहित ने दूध बेचने की एटीएम मशीन तो बनाया है। यह आइडिया उसे वाटर एटीएम मशीन की सहायता से आया है। रोहित का कहना है, कि वह अपनी एटीएम मशीन से गांव व शहर की भिन्न–भिन्न जगहों पर दूध बेचता है।

ज़िन्दगी का
बेस्ट डिसिज़न!
JOHN DEERE
John Deere
5210
Gear Pro™ Tractor
38 %
Backup Torque & Higher
Lifter Capacity
SELF- ADJUSTING
SELF- EQUALIZING
Hydraulically Actuated Oil
Immersed Disc Brake

महिंद्रा ने भारत के 77 वें स्वतंत्रता दिवस के पावन पर्व पर 7 ट्रैक्टर लॉन्च किए

हिंदुस्तान के 77वें स्वतंत्रता दिवस के पावन उपलक्ष्य पर महिंद्रा ओजा 7 रेवोल्यूशनरी लाइटवेट ट्रैक्टर का अनावरण हुआ। यह भव्य कार्यक्रम साउथ अफ्रीका के केपटाउन में आयोजित हुआ। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि 1945 में स्थापित महिंद्रा समूह सबसे बड़े एवं सबसे बहुराष्ट्रीय महासंघों में से एक है। 100 से ज्यादा देशों में 260,000 कर्मचारियों वाली कंपनी है। कृषि उपकरणों के इलाकों में यह सदैव अग्रसर रही है। 2018 में फॉर्च्यून इंडिया 500 द्वारा भारत में शीर्ष कंपनियों की सूची में इसे 17वां स्थान मिला है। इसकी सहायक कंपनी महिंद्रा ट्रैक्टर्स माला के अनुरूप दुनिया में ट्रैक्टर की सबसे बड़ी निर्माता कंपनी है।

महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड ने 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य पर साउथ अफ्रीका में महिंद्रा ओजा 7 के साथ रेवोल्यूशनरी लाइटवेट ट्रैक्टर को वैश्विक रुप से लॉन्च किया गया। महिंद्रा ने आज ट्रैक्टर विनिर्माण प्रभाग महिंद्रा ओजा से पर्दा उठाया, जिसे कंपनी "सबसे तकनीकी रूप से उन्नत वैश्विक ट्रैक्टर प्लेटफॉर्म" कहती है।

इन ट्रैक्टरों की खासियतें ये रहेंगी

महिंद्रा कंपनी द्वारा नवीन हल्के वजन वाले वैश्विक ट्रैक्टर प्लेटफॉर्म में चार उप-ट्रैक्टर प्लेटफॉर्म होंगे, जिनमें सब-कॉम्पैक्ट, कॉम्पैक्ट, स्मॉल यूटिलिटी और लार्ज यूटिलिटी ट्रैक्टरों की श्रेणियां शम्मिलित हैं। साथ ही, महिंद्रा ओजा ट्रैक्टर प्लेटफॉर्म 40 मॉडलों को निर्मित करने जा रहा है, जिन्हें चार उप-प्लेटफॉर्मों पर विकसित किया जाएगा।

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इन ट्रैक्टरों की विशेषता यह है, कि यह 21 एचपी से लेकर 70 एचपी तक के हैं। कंपनी ने आज स्वतंत्रता दिवस पर साउथ अफ्रीका में ओजा ट्रैक्टर प्लेटफार्म को वैश्विक रूप से लॉन्च किया है। इसमें 7 ट्रैक्टर प्रस्तुत किए गए हैं। कंपनी इन ट्रैक्टर को ओजा 2130, ओजा 3132 ओजा 3140, ओजा 2121, ओजा 2124, ओजा 2127 व बाकी नाम दिए हैं। इन ट्रैक्टरों में 20 एचपी से लेकर 40 एचपी (14.91KW – 29.82KW) के हैं। समस्त ट्रैक्टर सिंगल सीटर हैं माना जा रहा है, कि ये ट्रैक्टर बागवानी व कृषि क्षेत्र के लिए बेहतर सिद्ध होंगे।

महिंद्रा ओजा 40-मजबूत ट्रैक्टर रेंज इसका प्राथमिक बाजार दक्षिण पूर्व एशिया, अमेरिका, भारत और जापान है। इसे जापान के मित्सुबिशी महिंद्रा एग्रीकल्चर मशीनरी और चेन्नई में महिंद्रा रिसर्च वैली की इंजीनियरिंग टीमों के बीच सहयोग के जरिए से विकसित बनाया गया है, जो महिंद्रा के ऑटो और फार्म सेक्टर के लिए अनुसंधान एवं विकास केंद्र है।

महिंद्रा समूह के बेहतरीन ट्रैक्टर

OJA वर्ल्ड भारत में निर्मित होगा और 6 महाद्वीपों के विविध बाजारों में सेवा प्रदान करेगा।

ओजा: विश्व स्तरीय प्रौद्योगिकी के साथ भारत में किसानों को मजबूत बनाने को लेकर बल दिया जाएगा। भारत के लिए 7 मॉडल ट्रैक्टर लॉन्च किए गए, जो फास्ट इन कैटेगरी में प्रौद्योगिकी सुविधाओं पर आधारित हैं। यह तीन प्रौद्योगिकी पैक – MYOJA (इंटेलिजेंस पैक), PROJA (उत्पादकता पैक) एवं ROBOJA (ऑटोमेशन पैक). जहां OJA 2127 का भाव 5,64,500 रुपये बताई गई है। साथ ही, OJA 3140 की कीमत 7,35,000 रुपये है।

विश्व के लिए हिंदुस्तान में निर्माण

महिंद्रा ओजा ट्रैक्टर रेंज का निर्माण विशेष तौर पर महिंद्रा के अत्याधुनिक ट्रैक्टर के तौर पर किया जाएगा। भारत के जाहीराबाद एवं तेलंगाना में सबसे बड़े और सबसे उन्नत ट्रैक्टर विनिर्माण संयंत्रों में एक है।

महिंद्रा का आगामी लक्ष्य क्या है

महिंद्रा की भारत में अपनी इस रोमांचक यात्रा आरंभ करने के पश्चात अब OJA रेंज को उत्तर में लॉन्च किया जाएगा। ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका, यूरोप, अमेरिका, आसियान, ब्राजील और सार्क क्षेत्र में महिंद्रा भी इसकी मार्किंग करेगी। इसके साथ ही 2024 में थाईलैंड से चालू होकर ASEAN क्षेत्र में पदार्पण करेगी।

जानिए मेरी खेती के साथ VISHVAS ट्रैक्टर के टॉप 4 ट्रैक्टरों के फीचर्स और स्पेसिफिकेशन

VISHVAS ट्रैक्टर कंपनी भारत में ट्रैक्टर निर्माता कंपनियों में से एक है। इस कंपनी के ट्रैक्टरों को उन्नत फीचर्स और हर प्रकार की सुविधाओं के साथ बनाया गया है। इस कंपनी के ट्रैक्टरों के आधुनिक फीचर्स इन ट्रैक्टरों को सभी ट्रैक्टरों से बेहतर बनाते हैं। इस कंपनी के ट्रैक्टरों के बारे में MERIKHETI.COM वेबसाइट पर जा कर आप बहुत कुछ जान सकते है। हमारे इस लेख में हम आपको VISHVAS ट्रैक्टर कंपनी के टॉप 4 ट्रैक्टर्स के फीचर्स और स्पेसिफिकेशन के बारे में सम्पूर्ण जानकारी प्रदान करेंगे।

VISHVAS TRACTOR 345

विश्वास ट्रैक्टर्स लिमिटेड का नया 345 मॉडल ट्रैक्टर विशेष रूप से आपकी आवश्यकताओं के लिए डिज़ाइन किया गया है। ये ट्रैक्टर 45 HP के दमदार इंजन के साथ आता है और इसकी क्यूबिक कैपेसिटी 3120 CC है। ये ट्रैक्टर 3 सैलिंडर्स के साथ 2000 के रेटेड आरपीएम पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करता है। ट्रैक्टर में ड्राई टाइप एयर फ़िल्टर दिया गया है। ट्रैक्टर के इंजन को ठंडा रखने के लिए इस ट्रैक्टर में वाटर कूल्ड कूलिंग सिस्टम दिया गया है। इस ट्रैक्टर में कंपनी ने 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर्स दिए है। ट्रैक्टर की वजन उठाने की क्षमता 1200 किलोग्राम है और ऑप्शन में 1800 किलोग्राम लिफ्टिंग कैपेसिटी वाला भी ट्रैक्टर है जिससे आप ढुलाई के कार्य भी कर सकते है। इस ट्रैक्टर में आगे के टायर 6.00 X 16 और रियर टायर 13.6 X 28 के दिए गए है। इस ट्रैक्टर को खरीद कर आप अपने खेती के कार्य को आसान बना सकते है। इस ट्रैक्टर की कीमत भी कंपनी ने किसानों के बजट के आधार पर निर्धारित की है।

1.VISHVAS TRACTOR 335

ये ट्रैक्टर भी 35 HP श्रेणी में दमदार ट्रैक्टर है। VISHVAS TRACTOR 335 एक किफ़ायती और शक्तिशाली ट्रैक्टर है। ये ट्रैक्टर 2858 CC की क्यूबिक कैपेसिटी के साथ आता है। इंजन में 3 सिलेंडर दिए गए है इसी के साथ इंजन 1800 के रेटेड आरपीएम पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करता है। इसमें ड्राई टाइप एयर फ़िल्टर है और वाटर कूल्ड कूलिंग सिस्टम है। मध्यम वर्गीय किसानों के लिए ये ट्रैक्टर बहुत अच्छा साबित हो सकता है। इस ट्रैक्टर की वजन उठाने की क्षमता 1600 किलोग्राम है। इस ट्रैक्टर में आगे के टायर 6.00 X 16 और रियर टायर 13.6 X 28 के दिए गए है।

2.VISHVAS TRACTOR 340

विश्वास ट्रैक्टर्स लिमिटेड का 340 मॉडल ट्रैक्टर विशेष रूप से आपकी आवश्यकताओं के लिए डिज़ाइन किया गया है। ये ट्रैक्टर 40 HP के दमदार इंजन के साथ आता है और इसकी क्यूबिक कैपेसिटी 3120 CC है। ये ट्रैक्टर 3 सैलिंडर्स के साथ 2000 के रेटेड आरपीएम पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करता है। ट्रैक्टर में ड्राई टाइप एयर फ़िल्टर दिया गया है। ट्रैक्टर के इंजन को ठंडा रखने के लिए इस ट्रैक्टर में वाटर कूल्ड कूलिंग सिस्टम दिया गया है। इस ट्रैक्टर में कंपनी ने 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर्स दिए है। ट्रैक्टर की वजन उठाने की क्षमता 1800 किलोग्राम है जिससे आप ढुलाई के कार्य भी कर सकते है। इस ट्रैक्टर में आगे के टायर 6.00 X 16 और रियर टायर 13.6 X 28 के दिए गए है। ट्रैक्टर की फ्यूल टैंक कैपेसिटी 55 लीटर है। बड़ा डीज़ल टैंक होने से इस ट्रैक्टर से लंबे समय तक कार्य कर सकते है। इस ट्रैक्टर को खरीद कर आप अपने खेती के कार्य को आसान बना सकते है। इस ट्रैक्टर की कीमत भी कंपनी ने किसानों के बजट के आधार पर निर्धारित की है।

3.VISHVAS TRACTOR 118

VISHVAS कंपनी ने इस ट्रैक्टर को खास कर बागवानी के लिए बनाया है। इस मिनी ट्रैक्टर के इस्तेमाल से आप अपने बागवानी के कार्य को आसानी से कर सकते है। ये ट्रैक्टर 18 HP की पावर के साथ आता है। इंजन की क्यूबिक कैपेसिटी 995 CC है। ट्रैक्टर का इंजन 2600 के रेटेड आरपीएम पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करता है। इस ट्रैक्टर के गियरबॉक्स में 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर्स आपको कंपनी प्रदान करती है।

किसान धरमिंदर सिंह ने यांत्रिक रोपाई तकनीक से धान की रोपाई कर बेहतरीन उत्पादन अर्जित किया

किसान धरमिंदर सिंह ने खेती की नवीन तकनीकों के जरिए दूरगामी सोच की बेहतरीन मिसाल कायम की है। इस नवीन यांत्रिक रोपाई तकनीक के जरिए से उन्होंने अपने उत्पादन को दोगुना कर लिया है।

पंजाब के संगरूर जनपद के किसान धरमिंदर सिंह अपने 52 एकड़ खेत में गेहूं एवं धान की पारंपरिक खेती किया करते थे। वह पारंपरिक ढ़ंग से प्रवासी श्रमिकों के सहायता से कद्दू और पूसा 44 चावल के किस्म के धान की खेती किया करते थे। उन्होंने वर्ष 2019 में एक रोपाई करने की मशीनरी किराए पर ली एवं इससे उनकी खेती की पैदावार दोगुनी हो गई।

किसान धरमिंदर ने कोरोना काल में दौरान खेती की तकनीक बदली

कोरोना काल के चलते संपूर्ण पंजाब में धान की कटाई के लिए प्रवासी मजदूरों की काफी कमी थी। इस दौरान धर्मेंद्र सिंह ने विगत वर्ष के अनुभव का फायदा उठाया एवं पंजाब कृषि विश्वविद्यालय द्वारा अनुशंसित यांत्रिक रोपाई तकनीक का सहयोग लिया। साथ ही, धान की रोपाई के लिए वॉक-बैक ट्रांसप्लांटर खरीदा। धरमिंदर सिंह को कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों का भरपूर सहारा मिला। उनका कहना है, कि इस प्रकार से बोई गई धान की फसल सामान्य ढ़ंग से बोई गई फसल के मुकाबले काफी आसान होती है। इस मशीन की सहायता से बिजाई करने में कोई परेशानी भी नहीं आती है।

किसान धरमिंदर ने केवीके के वैज्ञानिकों के निर्देशन में खेती की थी

धरमिंदर सिंह ने 2022 में केवीके वैज्ञानिकों के दिशा निर्देशन के उपरांत एक एकड़ के खेत में धान की कम वक्त में पकने वाली किस्म पीआर 126 की बुवाई की, जिसकी पैदावार पूसा 44 किस्म से तकरीबन डेढ़ क्विंटल प्रति एकड़ ज्यादा थी। साथ ही, इस किस्म में जल की खपत भी काफी कम होती थी। इसी की तर्ज पर उन्होंने साल 2023 में कम समयावधि की किस्मों पीआर 126, पूसा बासमती 1509 एवं पूसा बासमती 1886 की रोपाई करी। उन्होंने अपना अनुभव साझा करते हुए बताया कि ट्रांसप्लांटर से धान की रोपाई करने पर प्रति वर्ग मीटर तकरीबन 30-32 पौधे सुगमता से लग जाते हैं। यह प्रति मीटर लगाए गए परिश्रम के मुकाबले में 16 से 20 पौधे अधिक हैं। इस मशीन की सहायता से लगाए गए धान की कतारें सीधी होती हैं। साथ ही, खेतों में खाद के छिड़काव करने में भी कोई दिक्कत नहीं होती है। इसके अतिरिक्त खेत बेहतर ढ़ंग से हवादार होते हैं, जिससे फसलों में बीमारियों का संकट कम हो जाता है।

किसान धरमिंदर को दोगुनी उपज हासिल हुई

धरमिंदर आगे कहते हैं, कि ट्रांसप्लांटर तकनीक से लगाए गए धान की उपज कद्दू विधि से लगाए गए धान के मुकाबले में प्रति एकड़ डेढ़ से दो क्विंटल ज्यादा होती है। पीआर 126 किस्म की समयावधि कम होने की वजह से गेहूं की कटाई एवं धान की रोपाई के मध्य पर्याप्त समय मिल जाता है। इस प्रकार धरमिंदर सिंह धान की दीर्घकालिक किस्मों की खेती को त्यागकर नवीन कृषि तकनीक अपनाकर इलाके के बाकी किसानों के लिए एक उदाहरण स्थापित कर दिया है।

www.rasiseeds.com

किसानों को समुचित वक्त पर खाद-बीज उपलब्ध कराए जाऐंगे, प्रत्येक चीज पर पैनी नजर रखी जाऐगी

खाद-बीज की बेहतरीन बिक्री करने के लिए सरकार ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है, जिससे किसान भाइयों को समुचित समय पर फायदा प्राप्त होगा। खाद-बीज के वितरण में जब भी कोई अव्यवस्था होती है, तो इसकी जबावदेही व जिम्मेदारी प्रत्यक्ष रूप से सरकारी समितियों (GOVERNMENT COMMITTEES) की होती हैं। यदि हम एक नजर डालें तो भारत के कई सारे राज्यों से आए-दिन खाद-बीज को लेकर कुछ न कुछ समस्याऐं आती ही रहती हैं।

बतादें, कि किसानों व समितियों की इस समस्या को दूर करने के लिए वर्तमान में उत्तर प्रदेश सरकार ने अपने प्रदेश की सहकारी समितियों को हाईटेक करना चालू कर दिया है। इसकी तैयारी भी सरकार के द्वारा शीघ्रता के साथ की जा रही है। ऐसा कहा जा रहा है, कि इस काम के लिए समितियों ने सीसीटीवी कैमरे से युक्त करने का प्रयास शुरू हो चुका है। वहीं, कुछ ही दिनों में यह कार्य पूर्ण हो जाएगा।

इस जनपद में सीसीटीवी कैमरा लगाए जाऐंगे

प्राप्त जानकारी के अनुसार, उत्तर प्रदेश के हमीरपुर जनपद में सर्व प्रथम खाद-बीज के वितरण (FERTILIZER DISTRIBUTION) पर निगरानी रखने के लिए सीसीटीवी कैमरा लगेंगे। हमीरपुर जनपद में कुल 42 सहकारी समितियां उपस्थित हैं। अब इन सभी को CCTV कैमरे से युक्त किया जाने का कार्य किया जा रहा है।

सरकार ने कर्मचारियों को निर्देशित किया

किसान भाइयों को सही समय पर खाद-बीज उपलब्ध करवाने के लिए सरकार ने समितियों के सभी कर्मचारियों को सख्त निर्देश दिए हैं। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा है, कि समितियों में मौजूद हर एक कर्मचारियों पर निगरानी रखने के लिए शीघ्र से शीघ्र कैमरा लगाए जाए।

इन जगहों पर उर्वरक नहीं मिल पाएगा

सहायक आयुक्त एवं सहायक निबंधक सहकारिता आर.पी गुप्ता का कहना है, कि जिले की जिन भी समितियों में CCTV कैमरा नहीं लग पाया है। वहां पर किसी भी प्रकार के उर्वरक का आवंटन नहीं किया जाएगा। यदि किसी दूसरे गांव से किसानों को खाद और उर्वरक (Manure and Fertilizers) मुहैय्या करवाई जाती है, तो उनके ऊपर कड़ी से कड़ी कार्रवाई भी की जाऐगी। इसके अतिरिक्त उन्होंने यह भी बताया है, कि इन कैमरों की सहायता से किसान व कर्मचारियों समेत खाद व उर्वरक की हर एक जानकारी सरकार के पास उपलब्ध होगी।

किसान भाई बेल की इन प्रजातियों को उगाकर सूखे में भी मुनाफा कमा सकते हैं

किसान भाई बेल की इन प्रजातियों को उगाकर सूखे में भी मुनाफा कमा सकते हैं

अगर आप सूखे वाले स्थान पर रहते हैं और साथ ही आप अपनी फसल से अच्छा उत्पादन नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं, तो आपके लिए बेल की बागवानी सबसे अच्छा विकल्प मानी जाती है। इसके लिए आज हम आपको नीचे दी गई किस्मों को अपने बगीचे में लगा सकते हैं। यह सभी किस्म वैज्ञानिकों के द्वारा तैयार की गई बेहतरीन किस्म हैं।

बेल की बागवानी कृषकों के लिए सबसे अच्छी है

बागवानी करने वाले किसान भाइयों के लिए बेल की बागवानी (WOOD APPLE GARDENING) सबसे बेहतर होती है। दरअसल यह हर एक तरह की परिस्थिति में अपना विकास करने में सक्षम हैं. इसके लिए किसान को अधिक मेहनत करने की कोई खास जरूरत नहीं होती है। अगर आप कम पानी वाले स्थान पर रहे रहे हैं, तो आपने यहां के ज्यादातर किसानों को बेल की खेती करते हुए देखा होगा। क्योंकि यह कम जल में भी अच्छा उत्पादन देती है। तो आइए आज हम अपने इस लेख में सूखे वाले स्थान पर बेल की बागवानी कैसे करें इसके बारे में विस्तार से जानते हैं।

बेल की लगभग सभी प्रजातियों को एक ही जगह पर आसानी से उगा सकते हैं

वैसे देखा जाए तो बेल की तकरीबन सभी किस्मों को किसान एक एक क्षेत्र में सहजता से उगा सकते हैं। परंतु, अगर आप सूखे वाली जगह पर रहते हैं और बेल की बागवानी से अच्छा खासा उत्पादन अर्जित करना चाहते हैं, तो आपको अपने खेत और बगीचे में इन किस्मों का चयन करना चाहिए। जिनके नाम कुछ इस प्रकार से हैं। थार नीलकंठ, गोमायशी और थार दिव्य जैसी बेहतरीन किस्मों को अपने घर लगा सकते हैं। यह सभी किस्म केंद्रीय बागवानी परीक्षण केंद्र वेजलपुर गुजरात में तैयार की गई हैं।

बेल की फसल के रोपण के दौरान आवश्यक काम

बेल की फसल से अच्छा फल प्राप्त करने के लिए किसानों को इसकी रोपण से लगाकर बाकी बहुत सारी जानकारियों पर ध्यान रखना होता है। बतादें, कि 2 माह पूर्व ही 1 घन मी. आकार के गड्ढेखोद कर खुला छोड़ दें। इसमें आपको न्यूनतम 3-4 टोकरी सड़ी हुई गोबर खाद और मिथाइल पैराथियान इत्यादि को डालना चाहिए। उसके बाद आपको खेत की बेहतर ढंग से सिंचाई करनी है। ऐसा करने के 1 माह पश्चात आपको पौधा का रोपण करना है। आपकी जानकारी के लिए बता दें कि बेल की रोपाई जुलाई-अगस्त माह में की जाती है और वहीं सिंचाई सुविधा होने पर फरवरी-मार्च के महीने में भी किसान रोपण कर सकते हैं।

जोश का
मेरा राज़
SWARAJ
UNMATCHED
VERSATILITY
POWER
COMFORT
RELIABILITY
STYLE
UNMATCHED
SWARAJ 855 FE
SWARAJ
NAYA
SWARAJ
MERA
SWARAJ

सामान्य लेख

सरसों की खेती से जुड़े सभी जरूरी कार्यों की जानकारी

सरसों एवं राई की फसल प्रमुख तिलहनी (मूंगफली, सरसों, सोयाबीन) फसलों के रूप में की जाती है। सरसों की फसल को कम खर्चा में ज्यादा मुनाफा देने के लिए जाना जाता है। सरसों की खेती विशेष रूप से राजस्थान के माधवपुर, भरतपुर सवई, कोटा, जयपुर, अलवर, करोली आदि जनपदों में की जाती है। सरसों का इस्तेमाल उसके दानो से तेल निकालकर किया जाता है। हमारे भारत में सरसों के तेल का उपयोग ज्यादा मात्रा में होता है। सरसों के बीजों से तेल के अतिरिक्त खली भी निकलती है। जिसको पशु आहार के तौर पर इस्तेमाल करते हैं।

इसकी खली में तकरीबन 2.5 प्रतिशत फास्फोरस, 1.5 प्रतिशत पोटाश और 4 से 9 प्रतिशत नत्रजन की मात्रा मौजूद रहती है। इस वजह से इसे बाहरी देशो में खाद के तौर पर भी उपयोग करते है। परंतु, भारत इसे केवल पशु आहार के रूप में इस्तेमाल में लाता है। सरसों के दानो में महज 30 से 48 प्रतिशत तक तेल विघमान रहता है। साथ ही, इसके सूखे तनो को ईंधन के रूप में भी उपयोग कर सकते हैं। आज हम आपको इस लेख में सरसों की खेती से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी देने जा रहे हैं।

सरसों के प्रकार

भारत में प्रमुख तौर पर सरसों दो प्रकार की पायी जाती है, जो काली सरसों एवं पीली सरसों के नामों से जानी जाती है। किसान भाई जिसकी मिटटी और मौसम के अनुसार खेत में बुवाई करके अच्छी पैदावार उठा सके। यदि सही मायने में देखा जाए तो अधिकांश किसान काली एवं भूरी सरसो की खेती करना ज्यादा पसंद करते हैं, जिनकी विस्तृत जानकारी इस प्रकार है:-

काली सरसों

काली सरसों गोल आकार के कड़े एवं पीली सरसों की तुलना में बड़े बीज होते हैं। इस सरसों का रंग गहरा भूरा से लेकर काला होता है। इस सरसों का प्रयोग किसान भाई अधिकांश खेती की फसल विक्रय के लिए करते हैं। इसकी पैदावार भी अधिक होती है। इसका प्रयोग खाने के तेल में अधिक होता है, तथा पेरने के बाद इसमें खली ज्यादा निकलती और जो जानवरों को भी खिलाने फायदेमंद होती है, या किसान भाई सीधे मंडी में भी बेच सकते है।

पीली सरसों

पीली सरसों को राई भी कहा जाता है, जिसके दाने काले सरसों के दानों की अपेक्षा में आकार में छोटे होते हैं। साथ ही, स्वाद भी दोनों में थोड़ा अंतराल होता है। जहां, काले सरसों के दाने का तेल निकालकर खाने में इस्तेमाल किया जाता है। वहीं, राई के दाने अचार में डालने एवं तड़का लगाने के लिए करते हैं। यदि इसके गुणों के संबंध में बात की जाए तो दोनों में समान गुण और पोषक तत्व होते हैं।

सरसों की खेती के लिए उपयुक्त मृदा जलवायु और तापमान

सरसों की फसल के लिए सर्दियो के मौसम को काफी अच्छा माना जाता है। इसके पौधों को अच्छे से विकास करने के लिए 18 से 24 डिग्री तापमान की आवश्यकता होती है। सरसों के पौधों में फूल निकलने के वक्त वर्षा अथवा छायादार मौसम फसल के लिए हानिकारक होता है। सरसों की खेती को करने के लिए सर्वाधिक बलुई दोमट मिट्टी की आवश्यकता होती है। क्षारीय और मृदा अम्लीय मिट्टी में इसकी फसल का उत्पादन नहीं किया जा सकता है।

पूसा बोल्ड

इस किस्म के पौधे 125 से 140 दिन के समयांतराल में उत्पादन देने के लिए तैयार हो जाते हैं। इसके पौधों की फलिया मोटी होती हैं। इसके दानो से 37-38 प्रतिशत तक ही तेल अर्जित किया जा सकता है। यह प्रति हेक्टेयर के मुताबिक 20 से 25 क्विंटल का उत्पादन देता है।

वसुंधरा (R.H. 9304)

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इस किस्म के पौधों की ऊंचाई 180-190 CM होती है। इसमें निकलने वाली फली सफेद रोली तथा चटखने प्रतिरोधी है। इसके पौधे पककर 130-135 दिन में उत्पादन देने के लिए तैयार हो जाते है। साथ ही, यह किस्म प्रति हेक्टेयर के अनुसार 25 से 27 क्विंटल की पैदावार देती है।

अरावली (आर.ऍन. 393)

सरसों की इस किस्म में फसल को पककर तैयार होने में 135 से 140 दिन का वक्त लगता है। इसके पौधे मध्यम ऊंचाई के होते हैं तथा इसके बीजों से 43 प्रतिशत तक का तेल प्राप्त हो जाता है। यह सफेद रोली प्रतिरोधी पौधा होता है, जिसकी पैदावार प्रति हेक्टेयर के अनुसार 22 से 25 क्विंटल होती है।

इसके अलावा भी सरसों की विभिन्न किस्मों को उगाया जाता है। जैसे कि जगन्नाथ (बी.एस.5), बायो 902 (पूसा जय किसान), टी 59 (वरुणा), आर.एच. 30, आशीर्वाद (आर.के. 3-5), स्वर्ण ज्योति (आर.एच. 9802), लक्ष्मी (आर.एच. 8812) आदि।

सरसों उत्पादन के लिए खेत की तैयारी

सरसों के बीजों को खेत में लगाने से पूर्व उसके खेत को बेहतर ढ़ंग से तैयार कर लेना चाहिए, जिससे सरसों की बेहतरीन पैदावार अर्जित की जा सके। सरसों की खेती के लिए भुरभुरी मृदा की जरूरत पड़ती है। चूँकि सरसों की फसल खरीफ की फसल के पश्चात की जाती है, इस वजह से खेत की बेहतर ढ़ंग से गहरी जुताई करनी चाहिए। ऐसा करने से खेत में पुरानी फसल के अवशेष पूरी तरह से नष्ट किए जाएें।

इसके उपरांत खेत को कुछ दिनों के लिए ऐसे ही खुला छोड़ दें, जिससे खेत की मृदा में बेहतर ढ़ंग से धूप लग जाये। इसके उपरांत रोटावेटर लगाकर खेत की दो से तीन तिरछी जुताई कर दें। जुताई के उपरांत पाटा लगाकर चलवा दें, जिससे खेत बिल्कुल एकसार हो जायेगा। साथ ही, जल-भराव जैसी परेशानी भी नहीं होगी।

सरसों की बुवाई का उपयुक्त समय व तरीका

सरसों की बुवाई सितम्बर से लेकर अक्टूबर के बीच कर देनी चाहिए। अक्टूबर के अंत तक भी इसकी बुवाई को किया जा सकता है। परंतु, सिर्फ सिंचित क्षेत्रों में। इसकी बुवाई के लिए 25 से 27 डिग्री तापमान को काफी अच्छा माना जाता है। सरसों की बुवाई कतारों में की जाती है। इसके लिए खेत में 30 CM का फासला रखते हुए कतारों को तैयार कर लेना चाहिए। इसके उपरांत 10 CM का फासला रखते हुए सरसों के बीजों को लगाना चाहिए। बीजों की बुवाई से पूर्व उन्हें मैन्कोजेब की उपयुक्त मात्रा से उपचारित कर लेना चाहिए। इसके पश्चात भूमि की नमी के मुताबिक बीजों को गहराई में लगा देना चाहिए। प्रति हेक्टेयर के हिसाब से 3 से 5 किलो बीजो की जरूरत पड़ती है।

किसी भी फसल की बेहतरीन पैदावार लेने के लिए खेत को पर्याप्त मात्रा में खाद एवं उर्वरक देने की जरूरत होती है। इसके लिए खेत की जुताई के दौरान 8 से 10 टन पुरानी गोबर के खाद को प्रति हेक्टेयर के मुताबिक ड़ाल देना चाहिए। इसके पश्चात खेत में ट्रैक्टर चलवा कर गोबर को बेहतर ढ़ंग से मिला दें। रासायनिक खाद के तौर पर प्रति हेक्टेयर के मुताबिक 30 से 40 किलोग्राम फास्फोरस, 375 किलोग्राम जिप्सम, 80 KG नत्रजन और 60 KG गंधक की मात्रा को खेत में डालें। फास्फोरस की संपूर्ण व नत्रजन की आधी मात्रा को जुताई के दौरान और आधी मात्रा को शुरुआती सिंचाई के वक्त दें।

सरसों के पौधों की सिंचाई कब और किस तरह करें

चूंकि, सरसों के बीजों की रोपाई सर्दियों के मौसम में होती है। इस वजह से इन्हें ज्यादा सिंचाई की जरूरत नहीं होती है। परंतु, समुचित वक्त पर सिंचाई कर बेहतर उत्पादन हांसिल किया जा सकता है। इसकी प्रथम सिंचाई बीजों की रोपाई के शीघ्र बाद कर देनी चाहिए। इसके उपरांत दूसरी सिंचाई को 60 से 70 दिन के समयांतराल में कर देना चाहिए। यदि खेत में सिंचाई की जरूरत होती है, तो उसमें पानी लगा देना चाहिए।
सरसों के खेत में खरपतवार पर कैसे नियंत्रण करें|

सरसों के पौधे अच्छे से विकास करें इसके लिए खरपतवार पर नियंत्रण करना अनिवार्य होता है। इसके लिए प्राकृतिक ढ़ंग से निराई-गुड़ाई कर खरपतवार निकाल देना चाहिए। इसकी पहली गुड़ाई 25 से 30 दिन के समयांतराल में कर देनी चाहिए। इसके उपरांत वक्त-वक्त पर जब खेत में खरपतवार नजर आए तो उसकी गुड़ाई कर देनी चाहिए। इसके अतिरिक्त फ्लूम्लोरेलिन की पर्याप्त मात्रा में सिंचाई के साथ छिड़काव कर रासायनिक ढ़ंग से खरपतवार पर काबू किया जा सकता है।

सरसों की कटाई, उत्पादन एवं फायदा
सरसों की फसल लगभग 125 से 150 दिन के समयांतराल में पूर्ण रूप से पककर तैयार हो जाती है, जिसके पश्चात इसकी कटाई की जा सकती है। अगर समुचित समय पर इसके पौधों की कटाई नहीं की जाती है, तो इसकी फलियाँ चटखने लगती है, जिससे पैदावार 7 से 10 प्रतिशत की कमी हो सकती है। जब सरसों के पौधों में फलियाँ पीले रंग की नजर आने लगे तब इसकी कटाई कर लेनी चाहिए। सरसों के पौधे प्रति हेक्टेयर के अनुसार 25 से 30 क्विंटल का उत्पादन देते हैं। सरसों का बाजार भाव काफी अच्छा होता है, जिससे किसान भाई सरसों की फसल कर बेहतर आय कर सकते हैं।

खुशखबरी: देश की राजधानी दिल्ली में अब प्याज की महंगाई नहीं निकालेगी आँसू

देश की राजधानी दिल्ली में टमाटर की बढ़ती कीमतों ने लोगों के पसीने छुड़ा दिए थे। इसके उपरांत एक के बाद एक सब्जियों की बढ़ती कीमतों से लोगों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। परंतु, वहीं जनता के लिए खुशखबरी की यह बात है कि NCCF बफर प्याज की खुदरा बिक्री चालू करेंगे।

बतादें, कि विगत दिनों धनिया, प्याज, अदरक और टमाटर आदि सभी सब्जियों की कीमतों में हुई बढ़ोत्तरी से जनता की जेब पर बेहद प्रभाव पड़ा है। ग्रहणियों का कहना है, कि मंहगाई के कारण से रसोई का बजट डगमगा गया था, इससे सही सलामत देशवासियों का जीना दुश्वार हो गया। साथ ही, आज से दिल्ली में राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता महासंघ सस्ती दरों पर प्याज बेचना शुरु करेगा। प्याज की कीमतों में निरंतर वृद्धि के मध्य सरकारी बफर स्टॉक से खुदरा प्याज की बिक्री 25 रुपये प्रति किलो के भाव पर शुरू होगी। जहां एक ओर टमाटर की महंगाई से जनता दीर्घकाल से परेशान थी। वहीं, फिलहाल टमाटर के भावों में गिरावट देखने को मिली है। परंतु, प्याज की कीमतों में तेजी देखने को मिल रही है। इस वजह से जनता को महंगाई से थोड़ी सहूलियत प्रदान करने के लिए सरकार आज मतलब 21 अगस्त से सस्ती कीमतों पर प्याज बेचने की कवायद आरंभ कर रही है।

उपभोक्ता विभाग के मुताबिक, दिल्ली में हाल ही में एक किलो प्याज 37 रुपये में बिक्रय किया गया। भारतीय राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता महासंघ (NCCF) पहले से ही केंद्र सरकार की तरफ से कम भाव पर टमाटर बेच रहा है। साथ ही, अब उसे खुदरा बफर प्याज का कार्यभार भी सौंपा गया है।

NCCF के प्रबंध निदेशक एनीस जोसेफ चंद्रा का कहना है, कि "शुरुआत में, हम दिल्ली में बफर प्याज की खुदरा बिक्री चालू करेंगे। हम अपने मोबाइल वैन और दो खुदरा दुकानों के जरिए से 25 रुपये प्रति किलोग्राम की रियायती दर पर बेचेंगे।"

दिल्ली में 21 अगस्त को तकरीबन 10 मोबाइल वैन भेजी जाएंगी। साथ ही, आहिस्ते-आहिस्ते इसका दायरा और अधिक बढ़ाया जाएगा। इसके अतिरिक्त NCCF दिल्ली में नेहरू प्लेस एवं ओखला में मौजूद अपने दो खुदरा दुकानों के माध्यम से भी प्याज बेचेगा। NCCF ने ONDC प्लेटफॉर्म के जरिए ऑनलाइन प्याज बेचने की भी योजना तैयार की है। परंतु, फिलहाल इसको जारी नहीं किया गया है। सरकार ने असम, दिल्ली, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और हिमाचल प्रदेश को वर्तमान में प्राथमिकता दी है। दरअसल, इन पांच प्रदेशों में थोक एवं खुदरा दोनों बाजारों में बफर प्याज का निपटान करके उपलब्धता को बढ़ाया जा रहा है। दिल्ली में यह बिक्री 21 अगस्त से चालू हो जाएगी, जबकि बाकी 4 राज्यों में 2 दिन पश्चात बिक्री शुरू होगी।

NCCF विगत एक माह से राजस्थान, उत्तर प्रदेश और दिल्ली में रियायती भाव पर टमाटर विक्रय कर रहा है। आरंभ में जब खुदरा बाजार में भाव ₹250 प्रति किलो तक पहुंच गया तो इसकी बिक्री ₹90 प्रति किलो पर चालू हुई। अब आवक में काफी सकारात्मक सुधार आया है, तो अनुदानित दर घटाकर 40 रुपये प्रति किलो निर्धारित कर दी गई है।

धान उत्पादक किसान ने महज 45 दिन के अंदर अगस्त माह में ही धान की कटाई कर मिशाल पेश की

किसान संजय सिंह का कहना है, कि जायद सीजन में धान की खेती करना किसान भाइयों के लिए काफी लाभकारी रहेगा। क्योंकि इस सीजन में खेती करने पर जल की बर्बादी नहीं होती है।

बिहार एक कृषि प्रधान राज्य है। यहां पर जुलाई के अंतिम सप्ताह तक कई किसान धान की रोपाई ही कर रहे थे। परंतु, आज हम आपको एक ऐसे किसान से मिलवाएंगे, जिन्होंने अगस्त माह में ही धान की कटाई चालू कर दी। मुख्य बात यह है, कि इन्होंने एक एकड़ भूमि में इंडिया गेट धान की खेती की थी। इससे लगभग 16 क्विंटल के आसपास इंडिया गेट धान की पैदावार हुई है। वर्तमान में इस किसान की चर्चा संपूर्ण जनपद में हो रही है। वे लोगों के लिए एक नजीर बन गए हैं। समीपवर्ती क्षेत्रों के किसान इनसे खेती के गुण सीखने आ रहे हैं।

धान उत्पादक किसान संजय सिंह कहाँ के मूल निवासी हैं

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि संजय सिंह कैमूर जनपद के बगाढ़ी गांव के निवासी हैं। उन्होंने एक एकड़ भूमि में गरमा धान का उत्पादन किया था। विशेष बात यह है, कि संजय सिंह विगत दो वर्ष से इंडिया गेट धान का उत्पादन कर रहे हैं। परंतु, इस बार उन्होंने जायद सीजन में इसकी खेती करने का निर्णय किया और उन्हें काफी हद तक इसमें सफलता भी प्राप्त हुई। संजय सिंह ने बताया है, कि गरमा धान की खेती करने में खरीफ सीजन की तुलना में कम खर्चे हुए। साथ ही, पानी की बर्बादी भी काफी कम हुई है। वे धान की बेहतरीन पैदावार से काफी उत्साहित हैं। उन्होंने बताया है, कि आगामी वर्ष वे 10 एकड़ में धान की खेती करेंगे।

फसल केवल 45 दिन के अंदर पककर तैयार हो गई

संजय सिंह ने बताया है, कि गरमा धान की खेती करने का विचार उत्तर प्रदेश के अंबेडकर नगर से मिला है। वहां पर उन्होंने किसानों को जायद सीजन में धान की खेती करते हुए पाया। इसके पश्चात उन्होंने अपने गांव में आकर गरमा धान की खेती चालू कर दी। उन्होंने बताया कि अप्रैल माह में इंडिया गेट धान की नर्सरी तैयार करने के लिए बुवाई की थी। साथ ही, मई माह के अंतिम सप्ताह में इसकी रोपाई की गई। संजय सिंह की माने तो केवल 45 दिन में ही फसल पककर तैयार हो गई थी। परंतु, बारिश के कारण इसकी कटाई करने में 20 दिनों का विलंभ हुआ। इसकी वजह से अगस्त माह में धान काटना पड़ा।

चावल विक्रय कर एक लाख रुपये तक की आमदनी कर सकते हैं

किसान संजय सिंह ने बताया है, कि जायद सीजन में महज दो बार ही धान की फसल की सिंचाई करनी होती है, जिससे कि खेत के अंदर नमी बनी रहे। साथ ही, खेती के ऊपर खर्चा भी कम आता है। उनके बताने के अनुसार जायद सीजन की सबसे बड़ी विशेषता यह है, कि मात्र 45 से 50 दिनों में ही फसल पूर्णतय पककर तैयार हो जाती है। इस प्रकार धान की फसल को तैयार होने में करीब 130 से 140 दिन लग जाते हैं। उन्होंने बताया है, कि 16 क्विंटल धान में लगभग 11 क्विंटल तक चावल का उत्पादन होगा। वर्तमान में 1000 रुपये में 10 किलो इंडिया गेट चावल आ रहा है। इस प्रकार वे 1100 किलो चावल बेचकर एक लाख रुपये से ज्यादा की आमदनी कर सकते हैं।

सरकारी नीतियां

इस राज्य सरकार ने किसान हित में देवारण्य योजना जारी की है

देवारण्य योजना' के जरिए से इस राज्य की सरकार जनजातीय लोगों को रोजगार प्रदान करेगी। इसके साथ उनकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार लाएगी। मध्य प्रदेश सरकार ने राज्य के जनजातीय लोगों के लिए 'देवारण्य योजना' लेकर आई है। इस योजना के तहत प्रदेश के लोगों को आयुर्वेद के जरिए से स्वास्थ्य लाभ प्रदान करना है। साथ ही, जनजातीय लोगों को रोजगार से जोड़ना भी है। इस योजना के तहत सरकार इंदौर शहर में एक आयुष सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल भी तैयार करेगी। जिसमें आयुर्वेद और यूनानी औषधि के विकास को भी बढ़ावा देगी।

देवारण्य योजना का प्रमुख उद्देश्य क्या है

देवारण्य योजना का उद्देश्य आयुर्वेद के जरिये से राज्य के जनजातीय लोगों को स्वास्थ्य लाभ प्रदान करना। साथ ही, उन्हें रोजगार के श्रम से जोड़ना है। इस योजना के माध्यम से प्रदेश में औषधियों के उत्पादन का एक वैल्यू चेन सिस्टम तैयार किया जाएगा। इस कार्य में सरकार राज्य के विभिन्न स्व-सहायता समूहों की सहायता लेगी। इस योजना में राज्य के कृषि उत्पादक संगठन, आयुष एवं वन विभाग, ग्रामीण विकास विभाग, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग, औद्योगिक नीति और निवेश प्रोत्साहन विभाग और जनजातीय कार्य विभाग मिलकर एक साथ कार्य करेंगे।

देवारण्य योजना के क्या-क्या फायदे हैं

देवारण्य योजना का फायदा आदिवासी एवं जनजाति के लोगों को ही मिलेगा। इसके जरिए से प्रदेश के अनुसूचित जनजातीय क्षेत्रों के निवासियों को रोजगार देना और उनकी आजीविका के लिए संसाधनों की पूर्ति करना है।

राज्य के जनजातीय लोग इस योजना से औषधीय एवं सुगंधित पौधों से दवाइयों का निर्माण कर पाएँगे। साथ ही, एक मजबूत सप्लाई चेन के माध्यम से उनकी बिक्री भी कर पाऐंगे।

देवारण्य योजना के लिए क्या पात्रता होनी चाहिए

इस योजना के लिए आवेदन करने वाले को मध्य प्रदेश राज्य का स्थायी निवासी होना अनिवार्य है। राज्य के केवल आदिवासी एवं जनजातीय लोग ही इसका फायदा उठा सकेगें। इसके अतिरिक्त योजना का फायदा लेने वाले राज्य के किसी भी स्वयं सहायता समूह का सदस्य हो। साथ ही, वह राज्य में ही कार्यरत हों। आवेदन करने वाले को सुगंधित और औषधीय पौधों के विषय में बेहतर जानकारी होनी अनिवार्य है।

IFFCO

पूर्णतः सहकारी स्वामित्व

Wholly owned by Cooperatives

अब से नवीन उर्वरक बैगों पर होगी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अपील

किसान भाइयों अब नवीन डिजाइन में पीएम मोदी कृषकों से रासायनिक तत्व कम करने की अपील करेंगे। केंद्र सरकार ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की किसानों से रासायनिक फसल पोषक तत्वों के उपयोग को कम करने की अपील के साथ उर्वरक बैग के लिए एक नवीन कवर डिजाइन जारी किया है।

आधिकारिक और उद्योग सूत्रों ने बताया है, कि उर्वरक विभाग ने शुक्रवार को निर्माताओं को लिखे एक पत्र में उनसे नवीन डिजाइन वाले बैगों की खरीद एवं उपयोग के लिए तत्काल प्रभाव से बनती कार्यवाही करने का आदेश दिया। सूत्रों के मुताबिक, पत्र के साथ विभाग ने समस्त निर्माताओं के साथ नवीन डिजाइन को साझा किया है। जिसको रसायन एवं उर्वरक मंत्री ने आखिरी रूप देकर स्वीकृति दी है।

नवीन डिजाइन में नीचे प्रधानमंत्री का छायाचित्र और अपील मौजूद होगी। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि अपील में हिंदी भाषा में कहा गया है, कि ‘ मैं किसानों से अपील करता हूँ, कि वह रासायनिक उर्वरकों का कम और संतुलित उपयोग करके धरती माँ को बचाने का एक बड़ा कदम उठाऐं। अगस्त में केंद्र सरकार ने ‘भारत’ नामक उर्वरकों के लिए एक एकल ब्रांड एवं उर्वरक सब्सिड़ी योजना “प्रधानमंत्री भारतीय जनविज्ञान परियोजना के अंतर्गत एक राष्ट्र, एक उर्वरक को लागू करने का फैसला लिया है।

एक देश, एक उर्वरक योजना जारी की

विगत वर्ष अगस्त में केंद्र सरकार ने ‘वन नेशन, वन फर्टिलाइजर’ योजना को लागू करने का फैसला लिया था। इसके तहत सभी फर्टिलाइजर भारत ब्रांड के तहत बेचे जा रहे हैं। इसके नीचे **‘प्रधानमंत्री भारतीय जन उर्वरक परियोजना’** का लोगो होता है। देशभर में अब सभी फर्टिलाइजर एक जैसी पैकिंग में बेचे जा रहे हैं।

केंद्र सरकार यूरिया की मैक्सिमम रिटेल प्राइस (MRP) तय करती है। ये यूरिया की उत्पादन लागत से भी कम होती है। मतलब कि कंपनियां लागत से भी कम भाव में यूरिया किसानों को बेचती हैं। केंद्र सरकार कंपनियों को होने वाली हानि की भरपाई अनुदान देकर करती है।

हाथी घास की खेती के लिए राजस्थान सरकार अच्छी-खासी सब्सिड़ी प्रदान कर रही है

हाथी घास की खेती पशुओं के चारे के रूप में की जाती है। राजस्थान सरकार इसकी पैदावार के लिए किसानों को सब्सिड़ी मुहैय्या करा रही है। दूध देने वाले पशुओं की सेहत के लिए उन्हें हाथी घास खिलाई जाती है। इससे उनके शरीर में जल की कमी नहीं होती है। साथ ही, वह दूध का उत्पादन भी बेहतर करते हैं। हालांकि, गर्मियों में घास का उत्पादन भी एक कठिन एवं महंगा कार्य होता है। हाथी घास की खेती के लिए पौधों को प्रति चार से पांच दिन में पानी देना होता है। ऐसी स्थिति में हरे घास की खेती कृषकों के लिए बेहद महंगा सौदा हो जाती है। परंतु, वर्तमान में किसानों को घास की खेती के लिए चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि सरकार किसानों को नेपियर घास की खेती के लिए अनुदान मुहैय्या करा रही है।

हाथी घास का क्या महत्व होता है

हाथी घास को नेपियर खास भी कहा जाता है। यह दिखने में बिल्कुल ही गन्ने की भांति होती है। आप पूरे साल हाथी घास का उत्पादन कर सकते हैं। इस घास में विभिन्न प्रकार के पोषक तत्व होते हैं। हाथी घास पशुओं के लिए गुणकारी होती है। अगर आप गर्मियों में गाय अथवा बकरियों को हाथी घास खिलाते हैं, तो इससे उनका पाचन तंत्र अच्छा रहता है और शरीर भी ठंडा रहता है। हाथी घास की विशेषता यह है, कि इसे आप किसी भी मौसम में सहजता से उगा सकते हैं।

सरकार हाथी खास की खेती के लिए सब्सिड़ी प्रदान कर रही है

राजस्थान सरकार ने एक बड़ा ऐलान किया है। यदि किसान वर्तमान में हाथी घास की खेती कर रहे हैं, तो राजस्थान सरकार उन्हें प्रति हेक्टेयर के हिसाब से 10,000 रुपये तक का अनुदान देती है। इस योजना का फायदा केवल राजस्थान राज्य के किसान उठा सकते हैं। इसके लिए आप अपने आसपास के किसी कॉमस सर्विस सेंटर में जाकर आवेदन कर सकते हैं।

कृषि अधिकारी भौतिक रूप से जाँच-पड़ताल करेंगे

जानकारी के अनुसार, खेतों के भौतिक निरीक्षण के पश्चात ही किसानों को अनुदान दिया जाएगा। प्रत्येक जनपद के कृषि पदाधिकारी खेतों में जाकर भौतिक निरीक्षण करेंगे। इसके पश्चात सब्सिडी के लिए आवेदन स्वीकार किया जाएगा। वहीं, अनुदानित धनराशि सीधे तौर पर किसान के खाते में हस्तांतरित कर दी जाएगी। इसके लिए किसानों को राज किसान साथी पोर्टल पर जाकर आवेदन करना पड़ेगा।

अब से लेखपाल खुद फसल सर्वेक्षण के लिए किसानों के खेत में जाऐंगे

किसानों के हित के लिए भारत सरकार द्वारा डिजिटल क्रॉप सर्वे की सुविधा को चालू कर दिया गया है, जिसके अंतर्गत बहुत सारे कार्यों को पूर्ण किया जाएगा। केंद्र सरकार के द्वारा आम जनता से लेकर कृषक भाइयों की आर्थिक मदद के लिए विभिन्न प्रकार की योजनाओं को शुरू किया हुआ है। इन्ही में से भारत सरकार ने डिजिटल क्रॉप सर्वे मतलब कि ई-पड़ताल (E-PADTAL) की योजना तैयार की है। कहा जा रहा है, कि जीपीएस युक्त ऐप के जरिए से लेखपालों को सर्वे रिपोर्ट शासन को भेजनी पड़ेगी।

इस संबंध में जिला कृषि अधिकारी पवन कुमार ने बताया

इस संदर्भ में जिला कृषि अधिकारी पवन कुमार प्रजापति का कहना है, कि भारत सरकार के किसान कल्याण मंत्रालय ने फसलों को डिजिटल क्रॉप सर्वे के निर्देश पारित किए हैं। इस व्यवस्था के अंतर्गत सरकार एग्री स्टेट मोबाइल ऐप (AGRI STATE MOBILE APP) जारी करेगी। लेखपाल खरीफ एवं रबी व जायद फसलों की बुवाई के उपरांत फसलों के सर्वेक्षण के लिए खेत पर जाएंगे।

डिजिटल जमाने में घर बैठे फसलों को रिपोर्ट शासन को भेजकर बेधड़क हो जाने वाले लेखपालों पर आफत आने वाली है। सरकार इस पर अंकुश लगाते हुए फसलों के सर्वे को डिजिटल करने जा रही है। लेखपालों को खेत में जाना ही पड़ेगा, क्योंकि बिना खेत में गए ऐप खुलेगा ही नहीं।

मोबाइल ऐप वर्तमान में तैयार हो रहा है

पवन कुमार प्रजापति जिला कृषि अधिकारी का कहना है, कि केंद्र सरकार की ओर से विगत दिनों जनपद के नायब तहसीलदार, तहसीलदार, लेखपाल आदि अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है। खरीफ फसल के सर्वे का काम चालू होना है। हालांकि, फिलहाल मोबाइल ऐप तैयार हो रहा है। इसके उपरांत लेखपाल सर्वे चालू कर देंगे। रबी फसल के सर्वे में पूर्णतय ऐप तैयार हो जाएगा।

बतादें कि जनपद के एक तहसीलदार ने बताया है, कि फसल की ई पड़ताल के लिए लेखपाल बतौर सर्वेयर का कार्य करेंगे। इनके ऊपर सुपरवाइजर के रूप में राजस्व निरीक्षक होगा। लेखपाल के सर्वे से असंतुष्ट होने पर उसे सुपरवाइजर रिजेक्ट कर देगा। इसके उपरांत नायब तहसीलदार स्वयं मौके पर जाकर सर्वे करके ऐप में रिपोर्ट दर्ज करेंगे।

किसानों को तेलंगाना सरकार ने नवीन मंच देकर दिया तोहफा

तेलंगाना के सूचना प्रौद्योगिकी और उघोग मंत्री केटी रामाराव ने भारत का प्रथम कृषि डेटा एक्सचेंज (एडेक्स) और कृषि डेटा प्रबंधन ढांचे (एडीएमएफ) की पेशकश की है। एक सरकारी बयान में बताया गया है, कि कृषि क्षेत्र के लिए डिजिटल सार्वजनिक ढांचे (डीपीआई) के रूप में विकसित ए-डेक्स – तेलंगाना सरकार, विश्व आर्थिक मंच और भारतीय विज्ञान संस्थान के मध्य की साझेदारी है।

किसानों के लिए सरकार की तरफ से विभिन्न तरह की योजनाऐं चलाई जा रही हैं। इन योजनाओं के माध्यम से किसानों को बेहद राहत प्रदान करने का काम किया जा रहा है। साथ ही, किसानों को आर्थिक सहयोग भी सरकार की तरफ से दिया जाता है। इसके अतिरिक्त किसानों की आजीविका में भी सकारात्मक सुधार लाने का कार्य सरकार की तरफ से किया जा रहा है। इस दौरान सरकार की तरफ से बड़ा ऐलान किया गया है। दरअसल, तेलंगाना सरकार की तरफ से एक विशेष पेशकश की गई है, जिससे किसानों को लाभ मिलने की आशा है।

कृषि डेटा एक्सचेंज की किसने पेशकश की है

तेलंगाना के सूचना प्रौद्योगिकी एवं उद्योग मंत्री केटी रामाराव ने भारत का प्रथम कृषि डेटा एक्सचेंज (एडेक्स) और कृषि डेटा प्रबंधन ढांचे (एडीएमएफ) की पेशकश की है। एक सरकारी बयान में बताया गया है, कि कृषि क्षेत्र के लिए डिजिटल सार्वजनिक ढांचे (डीपीआई) के रूप में विकसित ए-डेक्स – तेलंगाना सरकार, विश्व आर्थिक मंच एवं भारतीय विज्ञान संस्थान के मध्य की साझेदारी है।

कृषक भाइयों की आजीविका में सुधार लाने की कोशिश

मंत्री का कहना है, कि ''एडीईएक्स और एडीएमएफ दोनों उद्योग और स्टार्टअप के जरिए कृषि डेटा के उचित और कुशल उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए सही मंच प्रदान करते हैं और विशेष रूप से कृषि क्षेत्र में डेटा अर्थव्यवस्था को बड़ा बढ़ावा देते हैं। ये पहल तेलंगाना को खाद्य प्रणालियों में परिवर्तन लाने और किसानों की आजीविका में सुधार करने के लिए नवाचार और प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करने में सहायता करती हैं।"

संपूर्ण तेलंगाना में विस्तार किया जाएगा

परियोजना के चरण-एक में ए-डेक्स मंच वर्तमान में खम्मम जनपद में तैनात किया गया है। समय के साथ संपूर्ण राज्य में इसका विस्तार किया जाएगा। साथ ही, यह उम्मीद की जा रही है, कि इस तरह से किसानों की आमदनी में भी बढ़ोत्तरी देखने को मिल सकती है। साथ ही, उनके रहन-सहन में भी आगामी दिनों में सुधार देखने को सकता है।

भारत में सबसे लोकप्रिय मुख्यमंत्री कौन है?

आदित्य नाथ योगी

अरविंद केजरीवाल

शिवराज सिंह

ममता बनर्जी

अन्य

netahub.com

उत्तर प्रदेश सरकार के ऐलान से किसानों में खुशी की लहर

उत्तर प्रदेश कृषकों के लिए सरकार ने घर बैठे मिलेट्स की फसल को विक्रय करने की सुविधा को मंजूरी प्रदान कर दी है। राज्य के किसान नीचे दी गई जानकारी के अनुरूप रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया को पूर्ण कर सकते हैं।

कृषक भाइयों को उनकी फसल का उचित भाव दिलाने के लिए सरकार ने न्यूनतम समर्थन मूल्य को चालू किया, जिसमें करोड़ों किसानों को फायदा भी मिला है। इसी कड़ी में उत्तर प्रदेश के किसान भाई जो मोटे अनाज का उत्पादन करते हैं, उन्हें भी उनकी फसल का समुचित फायदा पहुंचाने के लिए MSP की खरीद चालू कर दी है। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि उत्तर प्रदेश में पहली बार न्यूनतम समर्थन मूल्य मतलब कि MSP की खरीद पर ज्वार, बाजरा, मक्का से किसानों को लाभ पहुंचेगा। कहा जा रहा है, कि इस काम के लिए सरकार ने रजिस्ट्रेशन कार्य भी आरंभ कर दिए हैं। जिससे किसानों को वक्त पर इसका पूर्ण फायदा मिल सके।

जानिए मिलेट्स की यह फसलें कितने में बिकेंगी

खबरों के अनुसार, किसान अपनी फसल को सही भाव पर बेच सकते हैं। मक्का (MAIZE) – 2090 /- प्रति क्विंटल, बाजरा (MILLET) – 2500 /- प्रति क्विंटल, ज्वार (हाइब्रिड) – 3180 /- प्रति क्विंटल, ज्वार (मालदाण्डी) – 3225 /- प्रति क्विंटल

इस प्रकार रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया पूरी करें

बतादें कि यदि आप उत्तर प्रदेश के किसान हैं और आपने धान की बिक्री करने के लिए पंजीकरण नहीं किया है, तो आप खाद्य एवं रसद विभाग की वेबसाइट **FCS.UP.GOV.IN** अथवा विभाग के मोबाइल एप UP KISHAN MITRA से रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया को पूर्ण करें।

बतादें, कि फसलों की रजिस्ट्रेशन की यह प्रक्रिया 1 अक्टूबर से 31 दिसंबर, 2023 तक कर सकते हैं। ख्याल रहे कि विभाग की आधिकारिक वेबसाइट पर रजिस्ट्रेशन करने का वक्त प्रातः 9 बजे से लगाकर शाम 5 बजे तक हैं। वहीं, इस संदर्भ में ज्यादा जानकारी के लिए आप चाहें तो सरकार के द्वारा जारी किए गए टोल फ्री नंबर- 1800 1800 150 पर कॉल कर संपर्क साध सकते हैं।

पंजीकरण के लिए आवश्यक कागजात

बतादें, कि यदि रजिस्ट्रेशन के दौरान आपका कोई भी कागजात सही नहीं पाया जाता है, तो आप इस सुविधा का फायदा नहीं उठा पाएंगे। आपकी रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया को भी निरस्त कर दिया जाएगा। इस वजह से जब आप रजिस्ट्रेशन कर रहे हैं, उस वक्त अपने सही व आवश्यक कागजात को ही दें। जैसे कि- किसान समग्र आई डी नंबर, ऋण पुस्तिका, आधार नंबर, बैंक खाता नम्बर, बैंक का आईएफएससी कोड और मोबाइल नंबर इत्यादि।

किसान मिलेट्स की फसल इन जगहों पर बेच सकते हैं

उत्तर प्रदेश के कृषक भाई अपने घर बैठे ऑनलाइन ढंग से विभिन्न जनपदों में अपनी फसल की बिक्री कर सकते हैं। चंदौली, बलिया, मिर्जापुर, भदोही, जालौन, चित्रकूट, बाँदा, प्रयागराज, कौशाम्बी, फतेहपुर, बांदा, चित्रकूट, हमीरपुर, महोबा, कानपुर देहात, कानपुर शहर, प्रयागराज, फतेहपुर, कौशाम्बी, प्रतापगढ़, जौनपुर, गाज़ीपुर, रायबरेली, सीतापुर, उन्नाव, हरदोई, सुलतानपुर, अमेठी, मिर्जापुर, जालौन, अयोध्या, वाराणसी, प्रतापगढ़, बुलंदशहर, गौतमबुद्ध नगर, बरेली, बदायूं, शाहजहांपुर, मुरादाबाद, रामपुर, संभल, अमरोहा, अलीगढ, कासगंज, एटा, हाथरस, आगरा, मथुरा, मैनपुरी, फिरोज़ाबाद, सीतापुर, हरदोई, उन्नाव, कानपुर नगर, कानपुर देहात, इटावा, औरैया, कन्नौज, फरुखाबाद, वाराणसी, जौनपुर और गाजीपुर आदि बहुत सारे जिले हैं।

मध्य प्रदेश सरकार अब से किसान कल्याण योजना के तहत 4 की जगह 6 हजार रुपए की धनराशि देगी

मध्य प्रदेश के कृषक भाइयों के लिए सरकार द्वारा KISAN KALYAN YOJANA में एक बड़ा परिवर्तन किया है। आपकी जानकारी के लिए बतादें कि किसानों को 4 हजार के स्थान पर 6 हजार रुपए दिए जाऐंगे। आज हम इस लेख में आपको योजना की धनराशि किस तरह मिलेगी इसके बारे में आपको जानकारी प्रदान करेंगे।

किसान कल्याण योजना

दरअसल, कृषकों के लिए समस्त राज्य सरकार आए दिन कोई न कोई योजना जारी करती रहती हैं। जैसा कि आप जानते हैं, कि आने वाले समय में मध्य प्रदेश के अंदर विधानसभा चुनाव (ASSEMBLY ELECTIONS) होने वाले हैं। इसकी तैयारियां राज्य सरकार ने पहले से ही करनी शुरू कर दी हैं। बतादें, कि किसानों की सहायता व विधानसभा चुनाव में अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए राज्य सरकार ने केंद्र सरकार के द्वारा शुरू की गई '**किसान कल्याण योजना**' (KISAN KALYAN YOJANA) के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है।

जानकारी के लिए बतादें, कि मध्य प्रदेश कैबिनेट ने वर्ष 2023-24 में इस योजना के लिए पात्र किसानों को आत्मनिर्भर व खेती-बाड़ी में शक्तिशाली बनाने के लिए 6,000 रुपए के भुगतान को स्वीकृति दे दी है।

KKY भुगतान धनराशि में हुआ इजाफा

किसान कल्याण योजना के अंतर्गत सरकार के द्वारा किसान भाइयों को 2 समान किश्तों में कुल 4 हजार रुपए का भुगतान किया जाता है। जो कि 1 अप्रैल से 31 अगस्त और 1 सितंबर से 31 मार्च के माह में प्रदान किए जाते थे। परंतु, सरकार ने योजना की धनराशि 4 हजार रूपए से बढ़ाकर 6 हजार रुपए कर दी है। यह धनराशि किसान भाइयों को 3 किश्तों के अंतर्गत मिलेगी।

- पहली किश्त- 1 अप्रैल से 31 जुलाई
- दूसरी किश्त- 1 अगस्त से 30 नवम्बर
- तीसरी किश्त- 1 दिसम्बर से 31 मार्च

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह विभिन्न योजनाऐं जारी की हैं

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने ना केवल किसान कल्याण योजना (Kisan Kalyan Yojana) को मंजूरी दी है। बल्कि बाकी बहुत सारी सरकारी योजनाओं व कार्यों को भी स्वीकृति दे दी है। जैसे कि मध्य प्रदेश में लड़कियों की शिक्षा (Girls Education) में सुधार करने के लिए राज्य में नए स्कूल खुलेंगे।

सरकार ने लगभग 19 कन्या शिक्षा परिसरों के विकास पर अपनी मोहर लगा दी है। मिली जानकारी के मुताबिक, राज्य के स्कूल शिक्षा विभाग के अंतर्गत 1362.91 करोड़ रुपये के खर्च से 37 स्कूलों का निर्माण किया जाएगा।

जानें दिल्ली की उन मंडियों के बारे में जहां सबसे ज्यादा उचित रेट पर सब्जी और फल मिलते हैं

दिल्ली में महंगाई सातवें आसमान पर पहुंच गई है। यहां पर आज भी टमाटर 140 रुपये किलो बिक रहा है। साथ ही, बाकी हरी सब्जियां भी बेहद महंगी हैं।

भारत में महंगाई से त्राहिमाम मचा हुआ है। लौकी, परवल, शिमला मिर्च, टमाटर, प्याज और करेला समेत समस्त तरह की सब्जियों की कीमत में आग लगी हुई है। 30 से 40 रुपये किलो मिलने वाला टमाटर 150 से 180 रुपये किलो बिक रहा है। इसी प्रकार प्याज के भाव में भी 20 प्रतिशत से ज्यादा का इजाफा हुआ है। 15 से 20 रुपये किलो वाला प्याज फिलहाल 25 से 30 रुपये में बिक रहा है। इसी प्रकार शिमला मिर्च भी काफी गुना ज्यादा महंगी हो गई है। जून से पूर्व जो शिमला मिर्च 20 रुपये किलो बिक रही थी, अब उसकी कीमत 80 से 120 रुपये किलो हो गई है।

दिल्ली में कई सब्जी मंडी ऐसी हैं जहां उचित रेट पर सब्जी व फल मिलते है

परंतु, आप राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में रहते हैं, तो आपको चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। दिल्ली में ऐसी कई मंडी हैं, जहां पर आप इस महंगाई में भी उचित भाव पर सब्जियां खरीद सकते हैं। परंतु, मंडियों में प्रथम स्थान पर आजादपुर सब्जी मंडी का नाम आता है। यह एशिया की सबसे बड़ी सब्जी मंडी में से है। इस सब्जी मंडी की स्थापना 1977 में की गई थी। इस मंडी में समस्त प्रकार की सब्जी और फल कम कीमत पर मिल जाते हैं। यहां पर आप थोक में फल और सब्जियों की खरीदारी कर सकते हैं। विशेष बात यह है, कि रिटेल मार्केट से न्यूनतम 20 प्रतिशत कम भाव पर आजादपुर मंडी में आपको फल और सब्जियां मिल जाऐंगी।

ओखला मंडी की स्थापना सन 1987 में की गई थी

इसके उपरांत ओखला सब्जी मंडी का स्थान आता है। इसकी स्थापना 1987 में की गई थी। इस सब्जी मंडी में 300 से अधिक फल और सब्जियों की दुकानें हैं। इसी मंडी की खासियत है, कि यहां पर दुकानदारों के मध्य प्रतिस्पर्धा बहुत ज्यादा हैं। ऐसे में दुकानदार ग्राहकों को बहुत सस्ती दर पर फल और सब्जी बेचते हैं। यह सब्जी मंडी 24 घंटे खुली रहती है।

शहादरा सब्जी मंडी की कीमत बहुत कम रहती है

शाहदरा सब्जी मंडी भी अपने सही भाव के लिए मशहूर है। यह पूर्वी दिल्ली जनपद में मौजूद है। यहां पर आप कश्मीरी गेट से रेड लाइन मेट्रो से पहुंच सकते हैं। अगर आपके घर में पार्टी अथवा कोई कार्यक्रम है और आपको होलसेल में फ्रूट- सब्जियां खरीदने हैं, तो आप यहां से खरीदारी कर सकते हैं। इस मंडी में सब्जियां डायरेक्ट किसान के खेतों से आती हैं। ऐसे में सब्जी और फलों की कीमत काफी कम रहती है।

आर्यपुरा दिल्ली की एक प्रसिद्ध सब्जी मंडी है

इसी प्रकार आर्यपुरा मंडी में भी आपको हर तरह की सब्जी और फल मिल जाएंगे। यह दिल्ली की एक प्रमुख सब्जी मंडी है। इस मंडी में फल और सब्जियों की बार्गेनिंग काफी ज्यादा होती है। ऐसी स्थिति में आप मोल भाव कर सब्जियों की कीमत भी तोड़ सकते हैं। विशेष बात यह है, यहां पर सभी तरह की सब्जी और फलों के बीज भी बिकते हैं। अगर आप घर की छत पर सब्जियों की खेती करने की योजना बना रहे हैं, तो आप यहां से बीज भी खरीद सकते हैं।

हरियाणा सरकार ने पराली आदि जैसे अवशेषों से पर्यावरण को बचाने की योजना बनाई

यह परियोजना भूमिगत स्तर पर समुदायों में जागरूकता बढ़ाने एवं वैकल्पिक विधियों को अपनाने को लेकर बढ़ावा देने के लिए कार्य करेगी, जिससे फसल अवशेष जलाने की जरूरत कम पड़ेगी।

एस एम सहगल फाउंडेशन ने वालमार्ट फाउंडेशन एवं फ्लिपकार्ट फाउंडेशन के साथ जुड़कर कृषि अवशेष के प्रभावी प्रबंधन के लिए पर्यावरण के अनुकूल विकल्पों को प्रोत्साहन देने और बच्चों एवं युवाओं में पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ाने के लिए एक एकीकृत परियोजना को जारी करने का ऐलान किया है। प्रोजेक्ट की विस्तृत जानकारी हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर से चण्डीगढ़ में साझा की गई। प्रोजेक्ट को वालमार्ट फाउंडेशन एवं फ्लिपकार्ट फाउंडेशन से मिले अनुदान के जरिए से हरियाणा में क्रियान्वित किया जाएगा। ऐसा कहा जा रहा है, कि इसका उद्देश्य हरियाणा में फसली अवशेषों को जलाने की वजह प्रदूषण के रूप में होने वाले दुष्प्रभाव को कम करना है।

इससे तकरीबन 100 गांवों को सहायता मिलेगी

मृदा के स्वास्थ्य, मानव कल्याण एवं पर्यावरण पर फसल अवशेष जलाने के नुकसानदायक प्रभावों को देखते हुए वॉलमार्ट फाउंडेशन द्वारा वित्त पोषित इस परियोजना का उद्देश्य 100 गांवों के 15,000 किसानों को प्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित करना है। किसानों को मृदा स्वास्थ्य एवं फसल उत्पादकता में सुधार पर ध्यान देने के विषय में बताया जाएगा। इसके साथ ही फसल अवशेष प्रबंधन हेतु पर्यावरण के अनुकूल स्थायी निराकरण के सुझावों के साथ-साथ फसल अवशेष जलाने से होने वाले कार्बन डाइऑक्साइड (सीओ2) उत्सर्जन को कम करने के संबंध में प्रशिक्षित किया जाएगा। इन समाधानों में फसल अवशेष प्रबंधन के लिए सुपर सीडर का इस्तेमाल और धान की कम अवधि वाली प्रजातियों को प्रोत्साहन देने के साथ-साथ किसानों के लिए क्षमता निर्माण के कदम शम्मिलित हैं।

हजारों बच्चों और युवाओं को जागरुक किया जाऐगा

बतादें, कि इसके अलावा फ्लिपकार्ट फाउंडेशन से प्राप्त अनुदान से इन जनपदों के 60 गांवों में 5,000 बच्चों एवं युवाओं में जागरूकता बढ़ाने और पर्यावरण को लेकर जागरूकता उतपन्न करने की दिशा में भी कार्य किया जाएगा। क्योंकि, यह क्षेत्र फसल अवशेष जलाने की परेशानी से सबसे ज्यादा प्रभावित है। साथ ही, यहां परिवार एवं समाज में परिवर्तन लाने के लिए युवा आगे बढ़कर कार्य कर सकते हैं।

यह परियोजना जमीनी तौर पर समुदायों में जागरूकता को बढ़ाने और वैकल्पिक तरीकों को अपनाने को लेकर बढ़ावा देने का कार्य करेगी, जिससे फसल अवशेष जलाने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। इसके अतिरिक्त, युवाओं में जागरूकता पैदा करने और समाज में बदलाव का वाहक बनने के लिए उन्हें शिक्षित करने पर भी बल दिया जाएगा। एस एम सहगल फाउंडेशन एक सहयोगी नेटवर्क बनाने और हरित भविष्य को प्रोत्साहन देने के लिए शोध संस्थानों, शिक्षाविदों और सामाजिक उद्यमों समेत बहुत से अन्य संबंधित पक्षों के साथ मिलकर कार्य करता रहा है।

सीएम खट्टर का इस पर क्या कहना है

हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर का कहना है, कि "हरियाणा सरकार बेहतर स्वास्थ्य एवं कल्याण के लिए वायु गुणवत्ता में सुधार की दिशा में फसलों के अवशेष प्रबंधन का उचित निराकरण खोजने के लिए प्रतिबद्ध है। हमने एक व्यापक रूपरेखा तैयार की है, जिसमें मजबूत एवं कुशल फसल अवशेष प्रबंधन के उपाय, प्रभावी निगरानी व इस लक्ष्य को लेकर लगातार जागरूकता अभियान शम्मिलित हैं। हम वॉलमार्ट फाउंडेशन, फ्लिपकार्ट फाउंडेशन और एस. एम. सहगल फाउंडेशन को इन महत्वपूर्ण परियोजनाओं के लिए बधाई देते हैं और आशा करते हैं कि ये परियोजनाएं हमारे समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालेंगी."

सोलर पैनल के उपयोग से खेती की उन्नति पर क्या प्रभाव पड़ता है, इससे क्या-क्या लाभ मिलते हैं

सोलर पैनल के इस्तेमाल से किसान सुगम तरीके से अपने खेतों की सिंचाई कर सकते हैं। भारत सरकार सोलर पैनल लगाने पर कृषकों को भारी अनुदान भी प्रदान कर रही है।

हमारे भारत के किसान कृषि के लिए अनियमित मानसून एवं अपर्याप्त विद्युत प्रणालियों पर आश्रित रहते हैं। इन चुनौतियों की वजह से किसानों की फसल उत्पादन क्षमता में गिरावट आती है। भारतीय किसानों के समीप भारत की उष्णकटिबंधीय जलवायु के रूप में एक मूल्यवान सोलर संपत्ति है, जो कृषकों को खेतों में सौर पैनल स्थापित कर ऊर्जा एवं पानी की जरूरतों को पूरा करने का अवसर प्रदान करती है। सौर पैनलों का उपयोग भारत के कृषि परिदृश्य को देखते हुए इसे एक बेहतर उपयोग के तौर पर लिया जा सकता है। फिलहाल, भारत में सौर पैनलों की काफी ज्यादा मांग भी है और भारत सरकार इसके इंस्टालेशन पर सब्सिड़ी भी उपलब्ध करा रही है।

ऊर्जा पर निर्भरता को कम करने में सहयोगी

भारत के ग्रामीण इलाकों में आम तौर पर बिजली की कमी अथवा आपूर्ति सही वक्त पर नहीं हो पाती है। ऐसी स्थिति में खेतों पर सौर पैनल स्थापित करके, किसान अपनी स्वयं की बिजली पैदा कर सकते हैं, जिससे सिंचाई, मशीनरी एवं अन्य कृषि कार्यों के लिए इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। इससे किसानों की ग्रिड पर निर्भरता काफी कम होती है। साथ ही, उत्पादकता में भी काफी सुधार आऐगा।

सौर ऊर्जा से सिंचाई सुगमता से की जा सकती है

खेती किसानी पूर्णतय पानी पर आश्रित होती हैं। वहीं, सौर ऊर्जा के जरिए से फसलों में सिंचाई के लिए कुओं एवं अन्य जल स्रोतों से पानी पंप करने में सहयोग मिलता है। सौर ऊर्जा से संचालित पंप भरपूर मात्रा में सूर्य की रोशनी का इस्तेमाल करके दिन के दौरान कार्य कर सकते हैं, जो पौधों की सिंचाई की आवश्यकता को पूर्ण कर सकता है।

अत्यधिक पैसों की बर्बादी पर रोकथाम

साधारण बिजली के मुकाबले में सोलर पैनल पर काफी कम खर्च आता है। एक बार सौर पैनल स्थापित हो जाने के उपरांत, उनकी परिचालन एवं रखरखाव लागत अपेक्षाकृत कम होती है, जिससे किसानों को बाकी महत्वपूर्ण जरूरतों के लिए धन की बचत हो पाती है। खेती के अतिरिक्त सौर ऊर्जा किसानों को आय का एक अतिरिक्त जरिया प्रदान कर सकती है। किसान भाई अतिरिक्त बिजली पैदा करके इसे नेट मीटरिंग के जरिए से ग्रिड को वापस बेच सकते हैं, जिससे इनकी आमदनी भी होगी।

यह पूर्णतय रिमोट एक्सेस है

सौर ऊर्जा से चलने वाली प्रौद्योगिकियों को डिजिटल टूल एवं सेंसर के साथ जोड़ा जा सकता है, जिससे किसानों को अपने खेतों की दूर से निगरानी एवं प्रबंधन करने में सुगमता होती है। इसमें मिट्टी की नमी, मौसम की स्थिति और फसल स्वास्थ्य की निगरानी करना, निर्णय लेने में सक्षम बनाना और संसाधन उपयोग को अनुकूलित करना शम्मिलित है।

ग्रामीण विकास में काफी सहयोगी है

खेतों पर सौर पैनल स्थापित करने से इसके रखरखाव एवं मरम्मत के लिए स्थानीय रोजगार उत्पन्न होते हैं। इससे ग्रामीण समुदायों में आर्थिक विकास को प्रोत्साहन मिलता है। भारत सरकार भी लोगों को सौर ऊर्जा अपनाने के लिए अलग-अलग प्रोत्साहन, सब्सिडी, योजनाएं एवं नीतियां प्रदान करती रहती है। कृषक भाई भी इन योजनाओं का फायदा उठाते हैं।

UNMATCHED
POWER & PERFORMANCE

Oil Immersed Brakes

2000* KG Lift Capacity

PREET 6049

Power Steering

12R + 3R Transmission

बकरियों पर पड़ रहे लंपी वायरस के प्रभाव को इस तरह रोकें

लंपी वायरस एक संक्रामक रोग है। यह पशुओं के लार के माध्यम से फैलता है। लंपी वायरस गाय बकरी आदि जैसे दूध देने वाले पशुओं पर प्रकोप ड़ालता है। इस वायरस के प्रकोप से बकरियों के शरीर पर गहरी गांठें हो जाती हैं। साथ ही, यह बड़ी होकर घाव के स्वरूप में परिवर्तित हो जाती हैं। इसको सामान्य भाषा में गांठदार त्वचा रोग के नाम से भी जाना जाता है। बकरियों के अंदर यह बीमारी होने से उनका वजन काफी घटने लगता है। सिर्फ यही नहीं बकरियों के दूध देने की क्षमता भी कम होनी शुरू हो जाती है।

लंपी वायरस के क्या-क्या लक्षण होते हैं

इस रोग की वजह से बकरियों को बुखार आना शुरू हो जाता है। आंखों से पानी निकलना, लार बहना, शरीर पर गांठें आना, पशु का वजन कम होना, भूख न लगना एवं शरीर पर घाव बनना इत्यादि जैसे लक्षण होते हैं। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि लंपी रोग केवल जानवरों में होता है। यह लंपी वायरस गोटपॉक्स एवं शिपपॉक्स फैमिली का होता है। इन कीड़ों में खून चूसने की क्षमता काफी अधिक होती है।

लंपी वायरस से बकरियों के शरीर पर क्या प्रभाव पड़ेगा

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इस वायरस की चपेट में आने के पश्चात बकरियों में इसका संक्रमण 14 दिन के अंदर दिखने लगता है। जानवर को तीव्र बुखार, शरीर पर गहरे धब्बे एवं खून में थक्के पड़ने लगते हैं। इस वजह से बकरियों का वजन कम होने लग जाता है। साथ ही, इनकी दूध देने की क्षमता भी काफी कम होने लगती है। दरअसल, इसके साथ-साथ पशु के मुंह से लार आनी शुरू हो जाती है। गर्भवती बकरियों का गर्भपात होने का भी खतरा बढ़ जाता है।

लंपी वायरस की शुरुआत किस देश से हुई है

विश्व में पहली बार लंपी वायरस को अफ्रीका महाद्वीप के जाम्बिया देश के अंदर पाया गया था। हाल ही में यह पहली बार 2019 में चीन में सामने आया था। भारत में भी यह 2019 में ही आया था। भारत में पिछले दो सालों से इसके काफी सारे मामले सामने आ रहे हैं।

बकरियों का दूध पीयें या नहीं

लंपी वायरस मच्छर, मक्खी, दूषित भोजन एवं संक्रमित पाशुओं के लार के माध्यम से ही फैलता है। इस वायरस को लेकर लोगों के भीतर यह भय व्याप्त हो गया है, कि क्या इस वायरस से पीड़ित पशुओं के दूध का सेवन करना चाहिए अथवा नहीं करना चाहिए। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि पशुओं के दूध का उपयोग किया जा सकता है। परंतु, आपको दूध को काफी अच्छी तरह से उबाल लेना चाहिए। इससे दूध में विघमान वायरस पूर्णतय समाप्त हो जाए।

इफको के मार्केटिंग डायरेक्टर श्री योगेन्द्र कुमार को MSCS का निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया

बकरियों पर पड़ रहे लंपी वायरस के प्रभाव को इस तरह रोकें

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इफको के मार्केटिंग डायरेक्टर योगेन्द्र कुमार को 17 AUGUST को हुए चुनाव में नवगठित-राष्ट्रीय स्तर की बहु राज्य बीज सहकारी समिति के अध्यक्ष के रूप में निर्विरोध चुना गया है।

योगेंद्र कुमार को साकेत स्थित इफको के मुख्यालय में आयोजित बीज सहकारी समिति की पहली वार्षिक आम सभा के दौरान चुना गया था। कृभको के अध्यक्ष चंद्र पाल सिंह यादव और एनसीडीसी के एमडी पंकज बंसल, योगेन्द्र कुमार के प्रस्तावक और अनुमोदक थे। इस चुनाव के लिए सहायक रजिस्ट्रार श्रीमती सुमन कुमारी को रिटर्निंग ऑफिसर नियुक्त किया गया था

सहकारी समितियाँ जो महत्वाकांक्षी परियोजना का हिस्सा हैं, उनमें इफको, कृभको, NAFED और दो सरकारी सहायता प्राप्त निकाय NDDB और NCDC शम्मिलित हैं। बोर्ड के सदस्यों में नेफेड के अध्यक्ष बिजेंद्र सिंह, कृभको के अध्यक्ष चंद्र पाल सिंह, एनडीडीबी के अध्यक्ष और एमडी मीनेश शाह और एनसीडीसी के एमडी पंकज कुमार बंसल शामिल थे।
इफको के चेयरमैन दिलीपभाई संघानी ने सोशल मीडिया के माध्यम से योगेंद्र कुमार को बधाई देते हुए लिखा, 'राष्ट्रीय बीज सहकारी समिति लिमिटेड के अध्यक्ष के रूप में नियुक्ति के लिए इफको के विपणन निदेशक योगेंद्र कुमार को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।'

दरअसल, जैसे ही योगेंद्र कुमार के चुनाव की खबर सामने आई सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर बधाई संदेशों की बाढ़ आ गई। सहकारी जगत के लोगों ने उन्हें बधाई देने में एक क्षण नहीं गंवाया। इफको के एमडी डॉ. यू.एस.अवस्थी से लेकर उर्वरक कंपनी के अन्य कनिष्ठ और वरिष्ठ कर्मचारियों और अन्य लोगों ने योगेंद्र कुमार को उनकी जीत पर बधाई दी। भूतपूर्व कृभको के महाप्रबंधक वी.के. तोमर बीज सहकारी समिति में अंशकालिक सीईओ के रूप में कार्यरत थे ऐसा कहा जा रहा है, कि सीईओ की पूर्णकालिक नियुक्ति अतिशीघ्र ही की जाएगी। "हमें बीज सहकारी समिति का सदस्य बनने के लिए 2000 पैक्स से आवेदन प्राप्त हुआ है। इस मुद्दे को अगली बैठक में उठाया जाएगा" तोमर ने भारतीय सहकारिता संवाददाता से कहा।

योगेंद्र कुमार के पास सहकारी समितियों में विभिन्न पदों पर कार्य करने का 36 वर्षों से ज्यादा का समृद्ध अनुभव है। उन्होंने चंद्र शेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर से कृषि में स्नातक की डिग्री हांसिल की है।

वह अपनी गतिशीलता के लिए काफी जाने जाते हैं, जो उनके काम में भी साफ झलकता है। उन्होंने इफको के सागरिका उत्पाद के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। अपनी यात्रा के दौरान, कुमार ने नीम के तेल और बहुत सारे बाकी उपयोगी नीम आधारित उत्पादों के उत्पादन को बढ़ाने के लक्ष्य से नीम के प्रचार-प्रसार में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
मल्टी स्टेट कोऑपरेटिव सोसाइटीज (एमएससीएस) अधिनियम, 2002 के अंतर्गत बीज सहकारी समिति जो कि गुणवत्ता वाले बीजों के उत्पादन, खरीद, प्रसंस्करण, ब्रांडिंग, लेबलिंग, पैकेजिंग, भंडारण, विपणन और वितरण के लिए एक शीर्ष संगठन के रूप में कार्य करेगी। साथ ही, रणनीतिक अनुसंधान एवं विकास और स्वदेशी प्राकृतिक बीजों के संरक्षण व संवर्धन के लिए एक प्रणाली विकसित करेगी।

छत्तीसगढ़ सरकार गोबर के व्यवसाय को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन दे रही है

आज के दौर में गोबर का व्यवसाय किसानों व आम जनता के लिए काफी ज्यादा किफायती सिद्ध हो रहा है। इस कारोबार से कृषक प्रति माह बेहतरीन आमदनी कर रहे हैं।

आज के आधुनिक दौर में लोग नौकरी सहित अपना स्वयं का एक छोटा-सा व्यवसाय कर रहे हैं। जिससे कि वह अपनी आमदनी को अधिक कर सकें। इसके लिए वह विभिन्न प्रकार के कार्यों को करते हैं। सिर्फ इतना ही नहीं व्यवसाय के लिए सरकार की ओर से भी पूरी मदद प्राप्त होती है। यदि आप भी व्यवसाय करने के विषय में सोच रहे हैं, तो आपको एक बार इस लेख को अवश्य पढ़ना चाहिए।

सरकार पशुपालक व किसानों से 10 रुपए प्रति किलो गोबर खरीदती है

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि छत्तीसगढ़ के बहुत सारे लोग गोबर का सही ढ़ंग से उपयोग कर रहे हैं। साथ ही, इससे वह प्रति माह हजारों की आमदनी करते हैं। दरअसल, यहा के अधिकांश किसान भाई प्राकृतिक खेती (NATURAL FARMING) करते हैं। साथ ही, सरकार के द्वारा भी इस खेती को ज्यादा करने पर सबसे ज्यादा जोर दिया जाता है। इसके लिए सरकार ने न्याय योजना की शुरुआत की है। इसमें ग्रामीण लोगों से 2 रुपए प्रति किग्रा की दर से गोबर की खरीद की जाती है। परंतु, वहीं यदि हम छत्तीसगढ़ राज्य की गोबर अर्थव्यवस्था की बात करें, तो सरकार की इस योजना के अंतर्गत किसानों और पशुपालकों से गोबर 10 रुपए प्रति किलोग्राम के हिसाब से खरीदा जाता है। इनसे खरीदा गया गोबर विभिन्न प्रकार के कार्यों में उपयोग किया जाता हैं।

गोबर का पेंट आजकल काफी चलन में आता जा रहा है

छत्तीसगढ़ में इस वक्त गोबर से पेंट निर्मित करने का व्यवसाय बहुत ही तीव्रता से फैल रहा है। अधिकांश लोग इसे अपना रहे हैं। बतादें, कि सरकार के द्वारा खरीदे गए गोबर से भी पेंट निर्मित करने का कार्य किया जाता है। यदि देखा जाए तो बाजार में इस पेंट की मांग भी काफी ज्यादा हो रही है।

गोबर से पेंट बनाने की योजना को सरकार ने दिया बढ़ावा

छत्तीसगढ़ सरकार राज्य में पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए एक पहल शुरू की है। दरअसल, राज्य में पशुधन के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए स्थापित गौठान में गोबर से पेंट निर्मित करने की योजना को तीव्रता के साथ आगे बढ़ाने पर सरकार आगे बढ़ रही है। बतादें, कि यह पेंट पूर्णतय प्राकृतिक है। इससे किसी भी प्रकार की कोई हानि नहीं देखने को मिलती है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, गोबर का पेंट बाजार में मिलने वाले पेंट की तुलना में काफी सस्ता और फायदेमंद है। इस पेंट को अपने घर पर करने से आपका घर गर्मी के मौसम में ठंडा बना रहेगा। साथ ही, यह अच्छी सुगंध भी प्रदान करेगा। इसके अतिरिक्त इस पेंट से आपके घर में कीड़े-मकोडे भी शीघ्रता से नहीं आते हैं। राज्य में अब तक 2 लाख 66 हजार 155 लीटर से भी ज्यादा प्राकृतिक पेंट का उत्पादन किया गया है। इस राज्य के ग्रामीण किसान और आम जनता इस गोबर का कारोबार करते हैं। उन्हें 4.15 करोड़ रुपये की आमदनी भी अर्जित हो चुकी है।

गोबर की बिक्री से कमाऐं हजारों-लाखों

यदि आप चाहें तो स्वयं भी गोबर के कारोबार को चालू कर प्रति माह लाखों की आमदनी अर्जित कर सकते हैं। इसके लिए आपको गोबर से निर्मित अपने समस्त उत्पादों जैसे कि गोबर की खाद, गोबर का पेंट आदि को या तो सरकार को बेचना होगा या फिर बाजार में भी आप इसे बेच सकते हैं, जिसकी आपको काफी अच्छी कीमत भी आसानी से मिल जाएगी।

खरीफ सीजन में धान की फसल की इस तरह करें देखभाल होगा अच्छा मुनाफा

धान की रोपाई के पश्चात फसल को ज्यादा देखभाल की आवश्यकता पड़ती है। इस वजह से उर्वरक, खाद एवं सिंचाई के साथ दूसरे प्रबंधन कार्य ठीक तरह से कर लेने चाहिये।

खरीफ सीजन में भारत के अधिकांश किसान अपने खेतों में धान की फसल लगाते हैं। चावल का बेहतरीन उत्पादन पाने के लिये आरंभ से अंत तक प्रत्येक कार्य सावधानी पूर्वक किया जाता है। परंतु, इतने परिश्रम के बावजूद धान के कल्ले निकलते वक्त विभिन्न समस्याऐं सामने आती हैं। धान की फसल के लिये यह सबसे आवश्यक समय होता है। इस वजह से आवश्यक है, कि उर्वरक, खाद एवं सिंचाई सहित दूसरे प्रबंधन कार्य सही तरह करके धान का अच्छा उत्पादन अर्जित किया जाये। कृषि विशेषज्ञों के मुताबिक, रोपाई के उपरांत फसल को ज्यादा देखभाल की जरूरत होती है। इस दौरान कीड़े एवं रोगों का नियंत्रण तो करना ही है। साथ ही, उत्पादन बढ़ाने वाले वैज्ञानिक नुस्खों पर कार्य करना फायदेमंद माना जाता है।

खेत से जलभराव की समुचित निकासी का प्रबंध करें

यदि फसल में अधिक जलभराव की स्थिति है, तो जल निकासी करके अतिरिक्त जल को खेत से बाहर निकाल दें। उसके बाद में हल्की सिंचाई का काम करते रहें, जिससे मृदा फटने की दिक्कत न हो सके। यह कार्य इस वजह से जरूरी है, कि फसल की जड़ों तक सौर ऊर्जा पहुंच सके। साथ ही, फसल में ऑक्सीजन की सप्लाई भी होती रहे। यह कार्य रोपाई के 25 दिन उपरांत ही कर लेना चाहिए, जिससे कि समय रहते पोषण प्रबंधन किया जा सके।

धान की फसल की बढ़वार के लिए समय पर पोषण की आवश्यकता होती है

धान की रोपाई के 25-50 दिन के दरमियान धान की फसल में कल्ले निकलने शुरू हो जाते हैं। ये वही वक्त है जब धान के पौधों को सबसे ज्यादा पोषण की आवश्यकता होती है। इस दौरान धान के खेत में एक एकड़ के हिसाब से 20 किलो नाइट्रोजन एवं 10 किलो जिंक का मिश्रण तैयार कर फसल पर छिड़क देना चाहिये। कृषक भाई यदि चाहें तो अजोला की खाद भी फसल में डाल सकते हैं।

फसलीय विकास एवं उत्तम पैदावार हेतु निराई-गुड़ाई

फसल का विकास और बेहतरीन उत्पादन के लिये धान के खेत में निराई-गुड़ाई का कार्य भी करते रहें। इससे फसल में लगने वाली बीमारियां एवं कीड़ों के प्रकोप का पता लग जाता है। निराई-गुड़ाई करने से जड़ों में आक्सीजन का प्रभाव होता है और पौधों के विकास में सहयोग मिलता है। कृषक भाई चाहें तो फसल पर उल्टी एवं सीधी दिशा में बांस से पाटा लगा सकते हैं, जिससे जड़ों में खिंचाव होने लगता है। साथ ही, बढ़वार भी काफी तेजी से होने लगती है।

धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण

अक्सर धान के खेत में गैर जरूरी पौधे उग जाते हैं, जो धान से पोषण सोखकर फसल की उन्नति से रोकते हैं, इन्हें खरपतवार कहते हैं। खरपतवार को नष्ट करने हेतु 2-4D नामक खरपतवार नाशी दवा का स्प्रे करें। पेंडीमेथलीन 30 ई.सी भी एक प्रमुख खरपतवार नाशी दवा है, जिसकी 3.5 लीटर मात्रा को 850-900 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हेक्टेयर के मुताबिक खेतों में डाल देना चाहिये।

जैविक खाद का इस्तेमाल धान की फसल में किया जाता है

प्राचीन काल से ही धान की फसल से बेहतरीन उत्पादन लेने के लिये जैविक विधि अपनाने का सलाह मशवरा दिया जाता है। विशेषज्ञों के अनुसार, धान एंजाइम गोल्ड का उपयोग करके बेहद लाभ उठा सकते हैं। बतादें, कि धान एंजाइम गोल्ड को समुद्री घास से निकाला जाता है। जो धान की बढ़वार और विकास में सहयोग करता है। यह ठीक अजोला की भांति कार्य करता है, जिससे कीड़ों एवं रोगों की संभावना भी कम हो जाती है। इसके छिड़काव के लिये एक मिली. धान एंजाइम गोल्ड को एक लीटर पानी में मिलाकर घोल बनायें। साथ ही, एक हेक्टेयर खेत में इसकी 500 लीटर मात्रा का इस्तेमाल करें।

तिल की फसल में लगने वाले प्रमुख रोग और उनका नियंत्रण

भारत में तिल को तिलहनी फसल के रूप में उगाया जाता है। तिल के तेल का उपयोग कई चीजों में किया जाता है। भारत मे तिल का उत्पादन उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश और गुजरात में अधिक होता है। तिल की खेती के लिए समतल भूमि और कम पानी की आवश्यकता होती है। तिल की खेती कई रोगों से ग्रस्त होती है जिसके कारण फसल की उपज बहुत कमी आती है जिससे किसानों को आर्थिक हानि होती है इसलिये हमें समय-समय पर अच्छा उत्पादन लेने के लिये इन रोगों के नियंत्रण के लिये उपाय करते रहना चाहिये। इस लेख में हम आपको तिल के प्रमुख रोगों और उनको नियंत्रण करने के उपायों के बारे में बातएंगे जिससे की आप समय से फसल में रोग नियंत्रण कर सकते है।

तिल में लगने वाले रोग एवं उनके उपाय

1.अल्टरनेरिया पत्ति धब्बा रोग

- इस रोग से संक्रमित पत्तियों पर संकेंद्रित वलय वाले छोटे, गोलाकार लाल-भूरे रंग के धब्बे बन जाते है।
- इसके अलावा डंठल, तने और कैप्सूल पर गहरे भूरे रंग के घाव हो जाते है। जैसे – जैसे रोग आगे बढ़ता है पत्तियों झुलसना कर झड़ना शुरू हो जाती है। फलियों पर संक्रमण होने पर बीज सिकुड़े हुए बनते है और फलियां फटना शुरू हो जाती है।

रोग नियंत्रण के उपाय

- जिस खेत में ये रोग आता हो उसमें कम से कम 2 साल तक फसलचक्र अपनायें।
- इस रोग से बचाव के लिए बुवाई के लिए प्रभावित व स्वस्थ बीज का चयन करना चाहिये।
- बुवाई से पहले बीज उपचार करना चाहिए जिसके लिये ट्राइकोडर्मा विरडी 5 ग्राम प्रति किग्रा. बीज दर से उपयोग करना चाहिये।
- खड़ी फसल में रोग को नियंत्रित करने के लिए मैंकोजेब की 400 ग्राम प्रति मात्रा की प्रति एकड़ स्प्रे करें।

2. फायलोडी रोग

- इस रोग को फायलोडी रोग के नाम से भी जाना जाता है यह रोग माईकोप्लाज्मा के द्वारा होता है एवं इस रोग में पुष्प के विभिन्न भाग विकृत होकर पत्तियों के समान हो जाते हैं। संक्रमित पौधों में पत्तियाँ गुच्छों में छोटी-छोटी दिखाई देती हैं और पौधों की वृद्धि रुक जाती है। ये रोग एक पौधे से दूसरे पौधे में जैसिड द्वारा फैलाया जाता है।

रोग नियंत्रण के उपाय

- सबसे पहले इस रोग वेक्टर को नियंत्रित करने के लिए, एनएसकेई @ 5% या नीम तेल @ 2% का छिड़काव करें जिससे की संक्रमित पौधे से रोग स्वस्थ पौधे में ना फैले और पैदावर हानि ना हो।
- इमिडाक्लोप्रिड 600 एफएस @ 7.5 मि.ली./कि.ग्रा. की दर से बीज उपचार करें।
- खड़ी फसल में रोग का संक्रमण दिखाई देने पर वेक्टर को नियंत्रण करे के लिए क्विनालफोस 25 ईसी 800 मिली/एकड़ या थियामेथोक्साम 25डब्ल्यूजी @ 40 ग्राम/एकड़ या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल @ 40 मिली/एकड़ का छिड़काव करें।
- तिल के साथ अरहर की खेती करके इस रोग को नियंत्रित किया जा सकता है।

3.जड़ गलन रोग

- इस रोग के लक्षण सबसे पहले पुरानी पत्तियों पर दिखाई देते है। पत्तियों का पीला होकर गिरना इस रोग के प्रमुख लक्षण है। संक्रमित पौधे की जड़े पूरी तरह से गल जाती है और पौधे को आसानी से मिट्टी से निकाला जा सकता है। इस रोग से संक्रमित पौधों की फलियाँ समय से पहले खुल जाती हैं।

रोग नियंत्रण के उपाय

- जिस खेत में रोग का अधिक प्रकोप होता हो उस खेत में तिल की फसल ना लगाए।
- रोग से बचाव के लिए समय से फसल बुवाई करें।
- खड़ी फसल में रोग को नियंत्रित करने के लिए कार्बेन्डाजिम 50 WP को 1 ग्राम प्रति लीटर की दर से पौधे की जड़ो में डालें।

4.पाउडरी मिल्डयू

- ये रोग कवक के द्वारा होता है इस रोग के लक्षण पत्तियों पर दिखाई देते हैं। इस रोग में पौधों की पत्तियों के ऊपरी सतह पर पाउडर जैसा सफेद चूर्ण दिखाई देता है। इस रोग का संक्रमण फसल में 45 दिन से लेकर फसल पकने तक होता है।

रोग नियंत्रण के उपाय

- रोग के नियंत्रण के लिए wettable सल्फर 80 WP 500 ग्राम को प्रति एकड़ हर 15 दिनों में संक्रमित फसल में डालें। इसके आलावा इस रोग को नियंत्रित करने के लिए 10 किलोग्राम sulphur dust को प्रति एकड़ के हिसाब से में डालें।

किसान विकास पत्र योजना के अंतर्गत सिर्फ 115 महीने में ही दोगुने हो जाएंगे पैसे

किसान भाइयों के लिए केंद्र सरकार एक बेहतरीन शानदार योजना चला रही है, जिसमें निवेश करते ही कृषकों की किस्मत बदल जाएगी। इसके लिए किसानों को अधिक धन भी खर्च नहीं करना पड़ेगा। यदि आप किसान हैं और निवेश करने की योजना बना रहे हैं, तो आपके लिए बहुत ही अच्छा अवसर है। पोस्ट ऑफिस डिपार्टमेंट अभी किसानों के लिए **किसान विकास पत्र योजना** चला रही है, जिसमें निवेश करने पर अच्छा खासा रिटर्न मिलेगा। विशेष बात यह है, कि इस योजना पर मिलने वाली ब्याज दर को सरकार ने हाल ही में बढ़ाया है। इस योजना के अंतर्गत निवेश करने पर आपको 7.5 फीसदी ब्याज दर मिलेगी। इसका अर्थ यह हुआ कि अब धनराशि 120 महीने के बजाए 115 महीने में ही दोगुना हो जाएगा।

विकास पत्र योजना जारी की गई है

दरअसल, भारत सरकार ने किसानों को आर्थिक तौर पर मजबूत करने के लिए किसान विकास पत्र योजना की शुरुआत की है। यह एक प्रकार की एकमुश्त निवेश योजना है। मतलब कि इस योजना में आपको वन टाइम धन जमा करना पड़ेगा। इसकी सबसे बड़ी खासियत है, कि एक तय अवधि के अंतर्गत ही किसानों का पैसा दोगुना हो जाएगा। ऐसे में निवेशकों को काफी अच्छा रिटर्न मिल जाता है। फिलहाल, देश में बेहद ज्यादा तादात में किसान इस योजना से जुड़ रहे हैं।

न्यूनतम 1000 रुपये का इंवेस्ट कर सकते हैं

केंद्र सरकार ने इसी वर्ष एक अप्रैल को किसान विकास पत्र पर मिलने वाले व्याज दर को 7.2% से बढ़ाकर 7.5 % एनुअल कर दिया। मतलब कि अब इंवेस्टर्स का पैसा 115 महीने में ही दोगुना हो जाएगा। साथ ही, सरकार ने पहले इसकी मैच्योरिटी टाइमिंग को 123 महीने से घटाकर 120 महीने किया था। परंतु, वर्तमान में इसे और कम कर के 115 माह कर दिया है। किसान विकास पत्र योजना का संचालन भारत के सभी डाकघरों और बड़े बैंकों में किया जा रहा है। यदि किसान भाई इस योजना में अपनी पूंजी निवेश करना चाहते हैं, तो डाक घर में जाकर अधिकारियों से बात कर सकते हैं। किसान भाई इस योजना में मिनिमम 1000 रुपये का निवेश कर सकते हैं। परंतु, अधिकतम धनराशि के लिए कोई सीमा तय नहीं की गई है।

इन दस्तावेजों की जरूरत पड़ेगी

इस योजना की सबसे बड़ी विशेषता है, कि किसान के घर का कोई भी सदस्य अपना खाता खुलवा सकता है। बस इसके लिए निवेशक की आयु 10 साल से ज्यादा होनी चाहिए। इसके लिए किसी अभिभावक की भी आवश्यकता नहीं पड़ेगी। साथ ही, खाता खुलवाने का प्रोसेस भी बहुत सुगम है। इसके लिए आपको सबसे पहले घर के समीपवर्ती स्थित पोस्ट ऑफिस जाना पड़ेगा। फिर, अधिकारी से बात करने के उपरांत खाता खुलवाने के लिए फॉर्म भरना होगा। खाता खुलते ही आपको किसान विकास पत्र का प्रमाणपत्र मिल जाएगा। किसान भाई पोस्ट ऑफिस जाते वक्त अपने साथ आधार कार्ड, आयु प्रमाण पत्र, पासपोर्ट साइज फोटोग्राफ, केवीपी एप्लीकेशन फॉर्म एवं मोबाइल जरूर ले जाएं, क्योंकि इसकी आवश्यकता पड़ सकती है।

मूंगफली की फसल को सर्वाधिक प्रभावित करने वाले कीट व रोगों की इस प्रकार रोकथाम करें

मूंगफली भारत की प्रमुख तिलहनी फसलों में से एक है। इसकी सबसे ज्यादा खेती तमिलनाडु, कर्नाटक, गुजरात और आंध्र प्रदेश में की जाती है। बतादें, कि मूंगफली की फसल में विभिन्न प्रकार के कीट और रोग लगते हैं। इन रोगों एवं कीटों पर काबू करना काफी आवश्यक होता है।

मूंगफली भारत की मुख्य तिलहनी फसलों में से एक है। इसकी सबसे ज्यादा खेती तमिलनाडु, कर्नाटक, गुजरात और आंध्र प्रदेश में होती है। इनके आलावा अन्य राज्यों जैसे- राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और पंजाब में भी इसकी खेती होती है। बतादें, कि मूंगफली की बुवाई प्रायः मॉनसून शुरू होने के साथ ही हो जाती है। उत्तर भारत में यह वक्त सामान्य रूप से 15 जून से 15 जुलाई के बीच का होता है। मूंगफली की खेती के लिए समुचित जल निकास वाली भुरभुरी दोमट और बलुई दोमट मिट्टी उत्तम होती है।

साथ ही, मूंगफली की फसल में खरपतवार पर रोक लगाने के अलावा कीटों और रोगों पर नियंत्रण पाना भी अत्यंत आवश्यक होता है। क्योंकि, फसल में खरपतवार, कीट और रोगों का अधिक प्रभाव होने से फसल पर काफी दुष्प्रभाव पड़ता है।

मूंगफली की फसल को प्रभावित करने वाले कीट

मूंगफली की फसल में सामान्यतः सफेद लट, बिहार रोमिल इल्ली, मूंगफली का माहू व दीमक लगते हैं। मध्य प्रदेश कृषि विभाग के मुताबिक, सफेद लट की समस्या वाले क्षेत्रों में बुवाई से पहले फोरेट 10जी या कार्बोफ्यूरान 3जी 20-25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में डालें। इसके अतिरिक्त दीमक के प्रकोप को रोकने के लिए क्लोरोपायरीफॉस दवा की 3 लीटर मात्रा को प्रति हेक्टेयर की दर से इस्तेमाल करें।

साथ ही, रस चूसक कीटों (माहू, थ्रिप्स व सफेद मक्खी) के नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड 0.5 मि.ली. प्रति लीटर अथवा डायमिथोएट 30 ई.सी. का 2 मि.ली. प्रति लीटर के मान से 500 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रयोग करें। इसी प्रकार पत्ती सुरंगक कीट के नियंत्रण के लिए क्यूनॉलफॉस 25 ई.सी. का एक लीटर प्रति हेक्टेयर का 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

मूंगफली की फसल को प्रभावित करने वाल रोग व नियंत्रण

मूंगफली की फसल में प्रमुख रूप से टिक्का, कॉलर एवं तना गलन व रोजेट रोग का प्रकोप होता है। टिक्का के लक्षण दिखते ही इसकी रोकथाम के लिए डायथेन एम-45 का 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए। साथ ही, छिड़काव 10-12 दिन के अंतर पर पुनः करें। वहीं रोजेट वायरस जनित रोग हैं, इसके विस्तार को रोकने के लिए फसल पर इमिडाक्लोप्रिड 0.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी के मान से घोल बनाकर स्प्रे करना चाहिए।

भारत सरकार द्वारा नॉन बासमती चावल के निर्यात पर लगाए गए बैन के हटने की संभावना

केंद्र सरकार की तरफ से हाल में 20 जुलाई को भारत से गैर-बासमती चावल के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया था। इसके पश्चात अमेरिका से लेकर दुबई तक चावल को लेकर हाहाकार देखा गया। वर्तमान में खबर है, कि चावल का निर्यात पुनः शुरू हो सकता है।

वर्तमान में केंद्र सरकार ने 20 जुलाई को भारत से गैर-बासमती चावल के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया था। सरकार का कहना था, कि चावल की बढ़ती कीमतों को काबू में रखने के लिए यह कदम उठाया गया है। परंतु, क्या यही एकमात्र कारण है चावल एक्सपोर्ट पर बैन लगाने की, क्या सरकार इस बैन को फिर से हटा सकती है ? इस संदर्भ में नीति आयोग के सदस्य रमेश चंद ने बहुत सारे संकेत दिए हैं। बतादें, कि भारत विश्व के 40 प्रतिशत चावल निर्यात पर राज करता है। इसलिए जब भारत ने चावल निर्यात पर प्रतिबंध लगाया तो दुबई से लेकर अन्य खाड़ी देशों में कोहराम सा मच गया, जहां चावल की खपत काफी ज्यादा है। साथ ही, अमेरिका जैसे देश में सुपर मार्केट के बाहर लंबी-लंबी कतारें देखी गईं। भारत 140 से अधिक देशों को चावल निर्यात करता है।

भारत सरकार ने चावल निर्यात पर इस वजह से लगाया बैन

इस संबंध में नीति आयोग के सदस्य एवं कृषि अर्थशास्त्री रमेश चंद ने कहा कि भारत इस वर्ष भी 2 करोड़ टन से ज्यादा चावल का निर्यात करेगा। इससे भारत की फूड सिक्योरिटी पर भी प्रभाव नहीं पड़ेगा। हालांकि, भारत कौ 'गैर बासमती सफेद चावल' के निर्यात को रोकना पड़ा है। इसकी वजह वैश्विक बाजारों में चावल की मांग का बहुत ज्यादा हो जाना है। यदि सरकार इस चावल के निर्यात पर बैन नहीं लगाती तो भारत से 3 करोड़ टन से ज्यादा चावल का निर्यात होता।

उन्होंने कहा कि जब से रूस-यूक्रेन युद्ध आरंभ हुआ है, तभी से खान पान की चीजों के भाव बेतहाशा बढ़े हैं। बीते 6 से 7 महीनों में चावल और चीनी के भाव अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बहुत बढ़े हैं और इनकी मांग भी ज्यादा है। इससे घरेलू बाजार पर प्रभाव पड़ने की संभावना थी। साथ ही, सरकार का दूसरे देश की सरकार के साथ होने वाला गैर-बासमती चावल का निर्यात आज भी सुचारू है।
चावल की फसल के उत्पादन में कमी होना

चावल पर बैन का एक अन्य कारक अल-निनो की वजह से गत वर्ष मानसून को लेकर अनिश्चिता होना। फिर विलंभ से बारिश होने की वजह से बुवाई का भी विलंभ से होना। इसके पश्चात बाढ़ की वजह से विभिन्न क्षेत्रों में फसल का चौपट होना। इन समस्त कारणों से सरकार ने सावधानी भरा रुख अपनाया और चावल के निर्यात को प्रतिबंध कर दिया।

भारत आगे चलकर एक्सपोर्ट पर बैन हटा सकता है

नीति आयोग के सदस्य रमेश चंद द्वारा मीड़िया एजेंसियों को दिए एक साक्षात्कार में कहा है, कि सरकार चावल के निर्यात से प्रतिबंध हटा सकती है। यह अंतर्राष्ट्रीय बाजार की डिमांड पर निर्भर करेगा। सरकार को अंतर्राष्ट्रीय बाजार में एक बार चावल की मांग गिरने की प्रतीक्षा है, जिससे कि चावल के निर्यात से प्रतिबंध हटाया जा सके। वहीं, इस बात का भी विशेष ध्यान रखा जाएगा, कि इस वर्ष फसल कैसी रहती है। नई फसल का आंकलन सितंबर-अक्टूबर तक लग जाएगा, इसी के आधार पर सरकार आगामी निर्णय लेगी।

रोग व कीटों से जुड़ी समस्त समस्याओं के हल हेतु हेल्पलाइन नंबर जारी हुआ

अगर आपकी फसल में लगातार कीट और रोग लगते रहते हैं। इसकी रोकथाम के लिए आप इधर से उधर चक्कर काट रहे हैं। यदि आपको इसके बावजूद भी इससे निजात नहीं मिल पाई है, तो इसी परेशानी को देखते हुए किसानों के लिए हेल्पलाइन नंबर जारी कर दिया गया है।

जैसा कि आप सब लोग जानते हैं, कि भारत सरकार ने संपूर्ण भारत के विभिन्न राज्यों में विभिन्न प्रकार के कीटनाशकों को बैन किया है। परंतु, हमारे भारत में अधिकांश किसानों को अब यह डर सता रहा है, कि अगर किसी कारण से उनकी फसल में कोई रोग लग जाता है, तो फिर किसान क्या करें और उसे ठीक करने के लिए वह किसके समीप जाए। ऐसे में आप घबराएं नहीं आज हम आपके इन सभी सवालों का जवाब लेकर आए हैं। किसानों को कीट और रोगों से बचाने के लिए हर संभव प्रयास करें।

बासमती एक्सपोर्ट डेवलपमेंट फाउंडेशन ने एक सरकारी हेल्पलाइन नंबर जारी आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि फसलों में लगने वाले रोगों की वजह से बासमती एक्सपोर्ट डेवलपमेंट फाउंडेशन ने एक सरकारी हेल्पलाइन नंबर जारी किया है। कहा जा रहा है, कि इस एक नंबर से किसानों को कीट से लेकर बाकी विभिन्न प्रकार की परेशानियों का समाधान सरलता से प्राप्त होगा। इसके लिए आपको ज्यादा कुछ करने की भी आवश्यकता नहीं है। आपको बस अपनी फसल में लगे रोग और कीटों की एक तस्वीर को खींचकर इस नंबर पर कॉल करके उन्हें भेजना होगा। यदि आप चाहें तो फसल की विडियो बनाकर भी इस नंबर पर भेज सकते हैं, जिससे कि आप समस्या से छुटकारा पा सकें।

नंबर की सेवा का समय कितना है

ऊपर बताया गया नंबर किसानों के लिए व्हाट्सएप हेल्पलाइन नंबर है। इस नंबर पर किसानों की परेशानी का जवाब सुबह 9 बजे से लेकर शाम 5 बजे तक ही मिल पाएगा। इस दौरान किसान कॉल करके भी फसल से संबंधित समस्या पर वार्तालाप कर सकते हैं।

इन कीटनाशकों पर प्रतिबंध लगा है

अगर आप इस बात से अभी तक अनभिज्ञ है, कि सरकार के द्वारा किन-किन कीटनाशकों पर प्रतिबंध लगाया गया है। तो आइए इसके ऊपर भी एक नजर डाल सकते हैं। बासमती उत्पादक पंजाब ने 10 कीटनाशकों को प्रतिबंधित किया है, जिनके नाम कुछ इस तरह हैं। ट्राइसाइक्लाजोल, एसेफेट, बुप्रोफेजिन, क्लोरपाइरीफोस, हेक्साकोनाज़ोल, प्रोपिकोनाजोल, थियामेथोक्सम, प्रोफेनोफोस, इमिडाक्लोप्रिड और कार्बेन्डाजिम आदि शम्मिलित हैं।

औषधीय खेती

किसान इस औषधीय फसल से कम समय में अधिक लाभ उठा सकते हैं

भारत में इस समय अश्वगंधा की खेती उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, पंजाब और गुजरात के अधिकांश किसान कर रहे हैं। भारतीय किसान अब पारंपरिक फसलों की खेती से बेअसर रहे हैं। वह दूसरे प्रकार की फसलों की खेती कर रहे हैं, जो उन्हें कम वक्त में अधिक मुनाफा दे। आज हम आपको इस लेख में फसल के विषय में बताने जा रहे हैं, जो कम वक्त में तगड़ा मुनाफा प्रदान कर सकती है। सबसे खास बात यह है, कि औषधीय फसल कोई आम फसल नहीं है।

अश्वगंधा

यह एक औषधीय पौधा है, जिसकी बाजार में बेहद माँग है। इसके साथ ही इस फसल की विशेषता यह है, कि बाजार में इसका प्रत्येक भाग बिक जाता है। मतलब कि पत्तियों से लेकर जड़ तक सब बाजार में काफी महंगी कीमत पर बिकता है। दरअसल, हम अश्वगंधा की बात कर रहे हैं। अश्वगंधा एक औषधीय फसल है, जो कि इम्यूनिटी बूस्टर (IMMUNITY BOOSTER) के नाम से जानी जाती हैं। तो चलिए आपको बताते हैं कि कैसे होती है इसकी खेती।

अश्वगंधा की खेती किन-किन राज्यों में की जाती है

अश्वगंधा की खेती अच्छी जल निकासी वाली बलुई दोमट अथवा हल्की लाल मिट्टी में अच्छी रहती है। भारत में इस वक्त इसकी खेती गुजरात, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और पंजाब के बहुत सारे किसान कर रहे हैं। अश्वगंधा उत्पादक राज्यों में मध्य प्रदेश और राजस्थान का नाम सबसे ऊपर है। यहां मनसा, नीमच, जावड़, मानपुरा, मंदसौर और राजस्थान के नागौर और कोटा में इसकी खेती बेहद बड़े स्तर पर की जाती है।

अश्वगंधा की खेती किस प्रकार की जाती है

अश्वगंधा की खेती रबी और खरीफ दोनों ही सीजनों में की जाती है। हालांकि, खरीफ सीजन में मानसून की बारिश के पश्चात इसकी रोपाई करने से अच्छा अंकुरण होता है। साथ ही, कृषि विशेषज्ञों की मानें तो मानसून की बारिश के दौरान इसकी पौध तैयार करनी चाहिये। वहीं, अगस्त अथवा सितंबर के मध्य खेत की तैयारी करके अश्वगंधा की पछेती खेती करना लाभदायक रहता है। आपको बतादें, कि अश्वगंधा के खेतों में जल निकासी की अच्छी व्यवस्था करें। क्योंकि, अत्यधिक पानी अश्वगंधा की गुणवत्ता को खराब कर सकते हैं।

जैविक विधि से खेती करके मिट्टी में पोषण और अच्छी नमी बरकरार रखने से ही बेहतरीन उत्पादन मिल जाता है। प्रति हेक्टेयर फसल में अश्वगंधा की खेती करने पर आपको 4-5 किलेग्राम बीजों की आवश्यकता पड़ती है। साथ ही, रोपाई, सिंचाई और देखभाल के उपरांत 5 से 6 महीने में अश्वगंधा की फसल पूर्णतय तैयार हो जाती है। एक अनुमान के अनुसार, प्रति हेक्टेयर भूमि में अश्वगंधा की खेती करने पर तकरीबन 10,000 की लागत आती है। परंतु, फसल का प्रत्येक भाग बिकने के बाद आपको इससे 70 से 80 हजार रुपये की आमदनी हो जाती है।

इस औषधीय पेड़ की खेती से किसान जल्द ही हो सकते हैं मालामाल, लकड़ी के साथ छाल की मिलती है कीमत

भारत में ऐसे कई पेड़ पाए जाते हैं जिनका औषधीय महत्व है। जो अन्य चीजों के साथ-साथ औषधि बनाने में भी उपयोग में लाए जाते हैं। ऐसा ही एक पेड़ है जिसे हम अर्जुन के नाम से जानते हैं। इसका उपयोग फर्नीचर बनाने के साथ-साथ औषधि बनाने में भी किया जाता है। इस पेड़ की छाल से आयुर्वेदिक काढ़ा बनाया जाता है जो बेड कोलेस्ट्रॉल समेत कई अन्य रोगों को कंट्रोल करने में सहायक होता है। साथ ही इस पेड़ के उत्पादों से कई अन्य रोगों की दवाइयां भी तैयार की जाती हैं।

अर्जुन का पेड़ अधिक तापमान से ज्यादा प्रभावित नहीं होता। इसलिए जिस जगह का तापमान 47 से 48 डिग्री सेल्सियस तक चला जाता हो, वहां भी यह पेड़ अच्छा विकास करता है। यह पेड़ किसी भी प्रकार की मिट्टी में आसानी से उगाया जा सकता है, लेकिन जलोढ़-कछारी, बलुई दोमट मिट्टी इसके लिए सबसे ज्यादा उपयुक्त मानी जाती है। इन मिट्टियों में यह पेड़ तेजी से विकास करता है। बुवाई से पहले इस पेड़ के बीजों को उबलते हुए पानी में भिगोकर उपचारित करना बेहद आवश्यक है। उपचारित करने के 4 से 5 दिन बाद बीजों में अंकुरण होने लगता है, अर्जुन के पेड़ के 90 से 92 प्रतिशत बीजों में अंकुरण संभव है।

अर्जुन के पेड़ को उस जगह लगाना चाहिए जहां सूरज की धूप आती हो। इस पेड़ को जितनी ज्यादा धूप मिलेगी, उसका विकास उतनी जल्दी होगा। छांव वाली जगहों में पेड़ को लगाने से पेड़ का विकास रुक जाएगा। इसलिए अर्जुन के पेड़ को बाग-बगीचों में न लगाएं। इसके साथ ही ध्यान रखें कि अर्जुन के पेड़ के आस पास पानी की उचित निकासी की व्यवस्था होनी चाहिए। पौधे के आस पास जल का जमाव होने से वह सड़ भी सकता है।

अर्जुन का पौधा लगाने पर इसका पेड़ बनने में 15 से 16 साल का वक्त लगता है। इस अवधि में यह पूरी तरह से तैयार हो जाता है। इस दौरान इसकी लंबाई लगभग 12 मीटर और तने की चौड़ाई 59-89 सेमी तक हो जाती है। भारतीय बाजार में इस पेड़ की छाल की जबरदस्त डिमांड है, इसलिए छाल महंगे दामों पर बिकती है। साथ ही किसान भाई इस पेड़ की लड़की बेंचकर भी अच्छी खासी कमाई कर सकते हैं। इसकी लकड़ी का उपयोग फर्नीचर के साथ कई अन्य कामों के लिए किया जाता है।

पशुपालक इस नस्ल की गाय से 800 लीटर दूध प्राप्त कर सकते हैं

किसान भाइयों यदि आप पशुपालन करने का विचार कर रहे हो और एक बेहतरीन नस्ल की गाय की खोज कर रहे हैं, तो आपके लिए देसी नस्ल की डांगी गाय सबसे बेहतरीन विकल्प है। इस लेख में जानें डांगी गाय की पहचान और बाकी बहुत सारी महत्वपूर्ण जानकारियां। किसान भाइयों के समीप अपनी आमदनी को बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रकार के बेहतरीन पशु उपलब्ध होते हैं, जो उन्हें प्रति माह अच्छी आय करके दे सकते हैं। यदि आप पशुपालक हैं, परंतु आपका पशु आपको कुछ ज्यादा लाभ नहीं दे रहा है, तो चिंतित बिल्कुल न हों।

आज हम आपको आगे इस लेख में ऐसे पशु की जानकारी देंगे, जिसके पालन से आप कुछ ही माह में धनवान बन सकते हैं। दरअसल, हम जिस पशु के विषय चर्चा कर रहे हैं, उसका नाम डांगी गाय है। बतादें कि डांगी गाय आज के दौर में बाकी पशुओं के मुकाबले में ज्यादा मुनाफा कमा कर देती है। इस वहज से भारतीय बाजार में भी इसकी सर्वाधिक मांग है।

डांगी नस्ल की गाय कहाँ-कहाँ पाई जाती है

जानकारी के लिए बतादें, कि यह गाय देसी नस्ल की डांगी है, जो कि मुख्यतः गुजरात के डांग, महाराष्ट्र के ठाणे, नासिक, अहमदनगर एवं हरियाणा के करनाल एवं रोहतक में अधिकांश पाई जाती है। इस गाय को भिन्न-भिन्न जगहों पर विभिन्न नामों से भी जाना जाता है। हालाँकि, गुजरात में इस गाय को डांग के नाम से जाना जाता है। किसानों व पशुपालकों ने बताया है, कि यह गाय बाकी मवेशियों के मुकाबले में तीव्रता से कार्य करती है। इसके अतिरिक्त यह पशु काफी शांत स्वभाव एवं शक्तिशाली होते हैं।

डांगी गाय कितना दूध देने की क्षमता रखती है

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इस देसी नस्ल की गाय के औसतन दूध देने की क्षमता एक ब्यांत में तकरीबन 430 लीटर तक दूध देती है। वहीं, यदि आप डांगी गाय की बेहतर ढंग से देखभाल करते हैं, तो इससे आप लगभग 800 लीटर तक दूध प्राप्त कर सकते हैं।

डांगी गाय की क्या पहचान होती है

यदि आप इस गाय की पहचान नहीं कर पाते हैं, तो घबराएं नहीं इसके लिए आपको बस कुछ बातों को ध्यान रखना होगा। डांगी गाय की ऊंचाई अनुमान 113 सेमी एवं साथ ही इस नस्ल के बैल की ऊंचाई 117 सेमी तक होती है। इनका सफेद रंग होता है साथ ही इनके शरीर पर लाल अथवा फिर काले धब्बे दिखाई देंगे। साथ ही, यदि हम इनके सींग की बात करें, तो इनके सींग छोटे मतलब कि 12 से 15 सेमी एवं नुकीले सिरे वाले मोटे आकार के होते हैं।

इसके अतिरिक्त डांगी गायों का माथा थोड़ा बाहर की ओर निकला होता है और इनका कूबड़ हद से काफी ज्यादा उभरा हुआ होता है। गर्दन छोटी और मोटी होती है। अगर आप डांगी गाय की त्वचा को देखेंगे तो यह बेहद ही चमकदार व मुलायम होती है। इसकी त्वचा पर काफी ज्यादा बाल होते हैं। इनके कान आकार में छोटे होते है और अंदर से यह काले रंग के होते हैं।

गोवंश में कुपोषण से लगातार बाँझपन की समस्या बढ़ती जा रही है

पशुओं में कुपोषण की वजह से बांझपन की बीमारियां निरंतर बढ़ती जा रही हैं। खास कर गोवंश में देखी जा रही है। गोवंश में बांझपन के बढ़ते मामलों के का सबसे बड़ा कारण कुपोषण है। इसका मतलब है, कि पशुओं को पौष्टिक आहार नहीं मिल पा रहा है। इस गंभीर समस्या से किसानों के साथ-साथ पशुपालन से संबंधित समस्त संस्थाऐं भी काफी परेशान हैं।

सरदार बल्लभभाई पटेल कृषि विश्वविद्यालय वेटनरी कॉलेज के अधिष्ठाता डॉ राजीव सिंह ने बताया है, कि व्यस्क पशुओं में कम वजन व जननागों के अल्प विकास से पशुओं में प्रजनन क्षमता में कमी देखने को मिल रही है। जैसा कि उपरोक्त में बताया गया है, कि इसका मुख्य कारण कुपोषण है।

इफ्को टोकियो जनरल इंश्योरेंस लिमिटेड के वित्तीय सहयोग से कृषि विश्व विद्यालय और पशुपालन विभाग द्वारा मेरठ के ग्राम बेहरामपुर मोरना ब्लॉक जानी खुर्द में निशुल्क पशु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन कुलपति डॉ के.के. सिंह एवं पशुपालन विभाग के अपर निदेशक डॉ अरुण जादौन के निर्देश में हुआ है।

इस उपलक्ष्य पर परियोजना के मार्ग दर्शक डॉ राजवीर सिंह ने कहा है, कि मादा पशुओं को संतुलित आहार के साथ-साथ प्रोटीन और खनिज मिश्रण जरूर देना चाहिए। जिसकी सहायता से उनकी गर्भधारण क्षमता बरकरार रहे। परियोजना प्रभारी डॉ अमित वर्मा का कहना है, कि पशुओं में खनिज तत्वों के अभाव की वजह से भूख ना लगना, बढ़वार एवं प्रजनन क्षमता में कमी जैसे समय पर गर्मी में ना आना, अविकसित संतानो की उत्पत्ति, दूध उत्पादन में कमी, एनीमिया इत्यादि समस्याऐं आ सकती हैं।

बतादें, कि पशुओं को प्रतिदिन 30 – 50 ग्राम मिनरल मिक्सचर पाउडर पशु आहार के लिए जरूर देना चाहिए। पशु स्वास्थ्य शिविर में पशु चिकित्सा महाविद्यालय कॉलेज मेरठ के विशेषज्ञों इनमें डॉ. अमित वर्मा, डॉ अरविन्द सिंह, डॉ अजीत कुमार सिंह, डॉ विकास जायसवाल, डॉ प्रेमसागर मौर्या, डॉ आशुतोष त्रिपाठी और डॉ रमाकांत इत्यादि की टीम के द्वारा 157 पशुओं को कृमिनाशक, बाँझपन प्रबंधन, गर्भावस्था निदान, रक्त व गोबर की जाँच जैसी पशु चिकित्सा सेवाएं और तदानुसार मुफ्त दवाएं भी प्रदान की गईं।

पशु चिकित्साधिकारी डॉ रिंकू नारायण एवं डॉ विभा सिंह ने पशुपालन के लिए सरकार की तरफ से दिए जाने वाले किसान क्रेडिट कार्ड तथा सब्सिड़ी योजनाओं के संबंध में जानकारी प्रदान की। प्रशांत कौशिक ग्राम प्रधान समेत अन्य ग्रामवासियों ने शिविर के आयोजन हेतु कृषि विवि की कोशिशों की सराहना करते हुए धन्यवाद व्यक्त किया।

One-stop solutions for improving the crop and soil texture.

मिट्टी की सेहत - खाद

मृदा संरक्षण की विधि एवं इससे होने वाले फायदे

मृदा का संरक्षण हमारे पौधों की सेहत की वृद्धि, कार्बन भंडारण, जल निस्पंदन और विभिन्न जीवों के लिए आवास प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बढ़ते शहरीकरण के वजह से मृदा का संरक्षण करना बेहद कठिन होता जा रहा है। मृदा संरक्षण का अर्थ मिट्टी को क्षरण होने से बचाना और इसे खेती लायक भूमि बनाए रखना होता है। खेती की मृदा की सुरक्षा करने का मकसद भविष्य की पीढ़ियों के लिए मृदा की उत्पादकता, उर्वरता एवं स्वास्थ्य को संरक्षित करना है। जल निस्पंदन, कार्बन भंडारण, मृदा की सेहत, पौधों की वृद्धि और विभिन्न जीवों के लिए आवास प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। आज हम इसके संरक्षण एवं लाभ के संबंध में आपको जानकारी देने जा रहे हैं।

मृदा संरक्षण की विधि

समुचित ढ़ंग से जुताई

खेती की मिट्टी की समोच्च रेखा में जुताई करने से इसमें जल के बहाव को कम होने से मृदा का कटाव कम होने से इसमें नमी बरकरार रहती है। इस तकनीक में मृदा का उपजाऊपन बढ़ता है एवं तीव्र हवाओं में भी इसकी सुरक्षा हो पाती है।

टेरेसिंग

टेरेसिंग तकनीक को खड़ी ढलान वाली मृदा पर चौड़े, समतल पट्टियों का निर्माण किया जाता है। यह तरीका खेती में जल के बहाव को धीमा कर देता है। साथ ही मिट्टी के पोषक तत्व भी बह नहीं पाते हैं।

विंडब्रेक

विंडब्रेक माध्यम में पेड़ों की बड़ी कतारों को खेतों के किनारों पर लगाया जाता है। यह पेड़ हवा की गति को कम करते हैं, जिससे मृदा का कटाव भी कम होता है। इसके अतिरिक्त यह वन्यजीवों को आवास भी प्रदान करता है। साथ ही, जैव विविधता में योगदान प्रदान करता है।

मृदा संरक्षण के फायदे

मृदा संरक्षण के अंतर्गत हमारे पर्यावरण एवं खेती पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। आइये इसके कुछ संरक्षण के तरीकों के विषय में जानते हैं।

उत्पादकता में इजाफा

मृदा संरक्षण मिट्टी की उर्वरता, संरचना एवं सेहत को बढ़ाता है, जिस वजह से मिट्टी की कृषि उत्पादकता लगातार बनी रहती है। मृदा में होने वाले कटाव, पोषक तत्वों की कमी एवं मृदा के क्षरण को कम करके किसान उच्च गुणवत्ता वाली फसलों की पैदावार कर पाते हैं।

मृदा क्षरण से बचाव

दरअसल, शहरीकरण के चलते मृदा क्षरण एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है। इससे मृदा में पोषक तत्वों की कमी हो जाती है। संरक्षण के लिए मृदा में समोच्च जुताई, सीढ़ीदार खेती एवं कवर क्रॉपिंग के तरीकों को अपनाकर खेत की मृदा के कटाव को कम किया जाता है, जो खेत में बढ़ रही फसलों की मांग को पूर्ण करने में सहायता करता है।

विविधताओं वाले भारत देश में मिट्टी भी अलग अलग पाई जाती है, जानें इनमे से सबसे ज्यादा उपजाऊ कौन सी मिट्टी है ?

जैसा कि हम जानते हैं, कि हिंदुस्तान विविधताओं का देश है। यहां तक कि भारत में मिट्टी भी विभिन्न प्रकार की पाई जाती है। मिट्टी (SOIL) के कारण यहां फसलों में भी विविधता पाई जाती है।

भारत का किसान विभिन्न प्रकार की फसलों का उत्पादन करता है। मुख्य बात ये है, कि भारत में जिस प्रकार भिन्न भिन्न फसल होती है, वैसे ही देश में अलग-अलग मिट्टी भी है, जो कि फसलों को सही पोषण देकर उन्हें उगने में सहायता करती है। आपने बचपन में अपनी किताबों में भारत में पाई जाने वाली मिट्टी के विषय में अवश्य पढ़ा होगा। क्या आपको मालूम है, कि हिंदुस्तान में कितने तरह की मिट्टी पाई जाती है ? यदि नहीं, तो इस लेख के जरिए आपको इनके सभी प्रकारों के बारे में जानकारी देंगे।

भारत में पाई जाने वाली प्रमुख प्रकार की मृदाएं जैसे कि – जलोढ़ मिट्टी (ALLUVIAL SOIL), लाल मिट्टी (RED AND YELLOW SOIL), काली मिट्टी (BLACK OR REGUR SOIL), पहाड़ी मिट्टी (MOUNTAIN SOIL), रेगिस्तानी मिट्टी (DESERT SOIL), लेटराइट मिट्टी (LATERITE SOIL) हैं।

भारत में पाई जाने वाली प्रमुख मृदाएँ:

1. जलोढ़ मिट्टी (ALLUVIAL SOIL)

इस मिट्टी का निर्माण नदी द्वारा ढो कर लाए गए जलोढ़ीय पदार्थों के जरिए हुआ है। यह मिट्टी भारत की सबसे महत्वपूर्ण मिट्टी है। इसका विस्तार मुख्य रूप से हिमालय की तीन प्रमुख नदी तंत्रों गंगा, ब्रह्मपुत्र और सिंधु नदी बेसिनों में देखा जाता है। इसके अंतर्गत पश्चिम बंगाल, पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, बिहार, असम के मैदानी क्षेत्र और पूर्वी तटीय मैदानी क्षेत्र आते हैं।

2. लाल मिट्टी (RED AND YELLOW SOIL)

यह मिट्टी ग्रेनाइट से निर्मित है। इस मिट्टी में लाल रंग रवेदार आग्नेय और रूपांतरित चट्टानों में लौह धातु की वजह है। इसका पीला रंग इसमें जलयोजन की वजह से होता है। प्रायद्वीपीय पठार के पूर्वी और दक्षिणी क्षेत्रों में बहुत बड़े हिस्से पर लाल मिट्टी पाई जाती है, जिसमें दक्षिण पूर्वी महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, उड़ीसा, छोटा नागपुर का पठार, तमिलनाडु, कर्नाटक, गोवा, उत्तर-पूर्वी राज्यों के पठार शम्मिलित हैं।

3. काली मिट्टी (BLACK OR REGUR SOIL)

यह मिट्टी ज्वालामुखी के लावा से निर्मित हुई है। इस वजह से इस मिट्टी का रंग काला है। इसे स्थानीय भाषा में रेगर या रेगुर मिट्टी के नाम से भी जाना जाता है। इस मिट्टी के निर्माण में जनक शैल और जलवायु ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

4. पहाड़ी मिट्टी (MOUNTAIN SOIL)

पहाड़ी मिट्टी हिमालय की घाटियों की ढ़लानों पर 2700 मी• से 3000 मी• की ऊंचाई के मध्य पाई जाती है। नदी घाटियों में यह मिट्टी दोमट और सिल्टदार होती है। परंतु, ऊपरी ढ़लानों पर इसका निर्माण मोटे कणों में होता है। पर्वतीय मृदा में विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की फसलों को उगाया जाता है। इस मृदा में चावल, मक्का, फल, और चारे की फसल प्रमुखता से उगाई जाती है।

5. रेगिस्तानी मिट्टी (DESERT SOIL)

मरूस्थलों में दिन के वक्त ज्यादा तापमान की वजह से चट्टानें फैलती हैं और रात्रि में अधिक ठंड की वजह से चट्टानें सिकुड़ती हैं। चट्टानों के इस फैलने और सिकुड़ने की प्रक्रिया के कारण राजस्थान में मरुस्थलीय मिट्टी का निर्माण हुआ है। इस मिट्टी का विस्तार राजस्थान, पंजाब और हरियाणा के दक्षिण-पश्चिमी हिस्सों में है।

6. लेटराइट मिट्टी (LATERITE SOIL)

लैटराइट मिट्टी उच्च तापमान एवं अत्यधिक वर्षा वाले इलाकों में विकसित होती है। यह अत्यधिक वर्षा से अत्यधिक निक्षालन (LEACHING) का परिणाम है। यह मिट्टी मुख्यतः ज्यादा वर्षा वाले राज्य महाराष्ट्र, असम, मेघालय, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु के पहाड़ी क्षेत्रों में एवं मध्यप्रदेश व उड़ीसा के शुष्क क्षेत्रों पाई जाती है।

प्रगतिशील किसान

बैंक की नौकरी की बजाए सब्जियों की खेती को चुनकर किसान हुआ मालामाल

किसान विनय कुमार का कहना है, कि राज्य में फिलहाल कोल्ड स्टोर, पॉली हाउस, ग्रीन हाउस की काफी ज्यादा कमी है। यदि सरकार सब्सिडी देकर इनकी तादात बढ़ाती है, तो किसानों की आय में और बढ़ोतरी होगी।

वर्तमान में खेती- किसानी भी किसी बिजनेस से कम नही है। भारत में बहुत सारे किसान खेती से लाखों नहीं, बल्कि करोड़ों रुपये की आमदनी कर रहे हैं। इसके लिए किसान पारंपरिक फसलों की अपेक्षा वैज्ञानिक तरीके से फूल, फल और सब्जियों की खेती कर रहे हैं। यही कारण है, कि अब खेती आहिस्ते-आहिस्ते व्यापार बन चुकी है। अब ऐसे में पढ़े- लिखे युवा भी खेती किसानी में काफी रुचि ले रहे हैं। आज हम तीन ऐसे दोस्तों के विषय में बात करेंगे, जो किराए पर भूमि लेकर सब्जी की खेती कर रहे हैं। इससे उन्हें काफी मोटी आमदनी हो रही है। अब ये तीनों दोस्त दूसरे लोगों को भी नौकरी दे रहे हैं।

ये तीनों दोस्त बिहार राज्य के पटना के रहने वाले हैं

विशेष बात यह है, कि ये तीनों दोस्त बिहार के पटना जनपद के निवासी हैं। ये तीनों पटना से लगभग 20 किलोमीटर की दूरी पर मौजूद बिहटा में लीज पर जमीन लेकर सब्जी की खेती कर रहे हैं। इन किसानों का नाम विनय राय, रंजीत मिश्रा और राजीव रंजन शर्मा है। ये तीनों प्रति वर्ष सब्जी बेचकर 50 लाख रुपये का शुद्ध मुनाफा कमा रहे हैं। विनय राय का कहना है, कि आज से लगभग 9 साल पहले वे मुंबई में बैंक में नौकरी किया करते थे। परंतु, उनका सपना खेती करने का था। इस वजह से उन्होंने नौकरी छोड़कर साल 2014 में खेती करना चालू कर दिया। वह अपने गांव के दोस्तों के साथ मिलकर वैज्ञानिक विधि से सब्जियों की पैदावार कर रहे हैं।

इनकी 50 बीघे सब्जियों की खेती में 20 से 25 मजदूर कार्य करते हैं

इनके खेत में प्रतिदिन तकरीबन 20 से 25 मजदूर कार्य करते हैं। मतलब कि इन तीनों दोस्तों ने खेती को व्यवसाय में तब्दील कर दिया है। अगर विनय नौकरी करते, तो केवल अपना और अपने परिवार का ही भरण पोषण कर पाते। परंतु, खेती से वे दूसरे लोगों को भी रोजगार के अवसर प्रदान कर रहे हैं। विनय राय ने बताया कि चार साल पहले उन्होंने खेती आरंभ की थी। सबसे पहले 10 बीघे जमीन में खीरा, ब्रोकली और गोभी की खेती की थी। इससे अच्छी आमदनी अर्जित हुई। इसके पश्चात वे आहिस्ते-आहिस्ते क्षेत्रफल बढ़ाते गए। अभी तीनों दोस्त 50 बीघे जमीन में हरी सब्जियों का उत्पादन कर रहे हैं। ये तीनों दोस्त एक साल में एक करोड़ रुपये से ज्यादा की सब्जियां बेचते हैं।

जानें ये कितनी आमदनी कर लेते हैं

विनय कुमार का कहना है, कि प्रदेश में फिलहाल कोल्ड स्टोर, पॉली हाउस, ग्रीन हाउस की बहुत कमी है। अगर सरकार अनुदान देकर इनकी तादात बढ़ाती है, तो किसानों की आय में और बढ़ोतरी होगी। साथ ही, विनय राय के 45 वर्षीय मित्र रंजीत मिश्रा का कहना है, कि वे एक खेत में वर्षभर के अंतराल में तीन फसल की खेती करते हैं। बतादें, कि ये लगभग 10 एकड़ में खीरा उगाते हैं। इसके अतिरिक्त तरबूज और खरबूज की भी खेती किया करते हैं। विगत वर्ष उन्होंने 25 लाख रुपए का पपीता विक्रय किया गया था। इसके अतिरिक्त ब्रोकली, गोभी और कद्दू बेचकर भी वो लाखों रुपये की आमदनी कर लेते हैं।

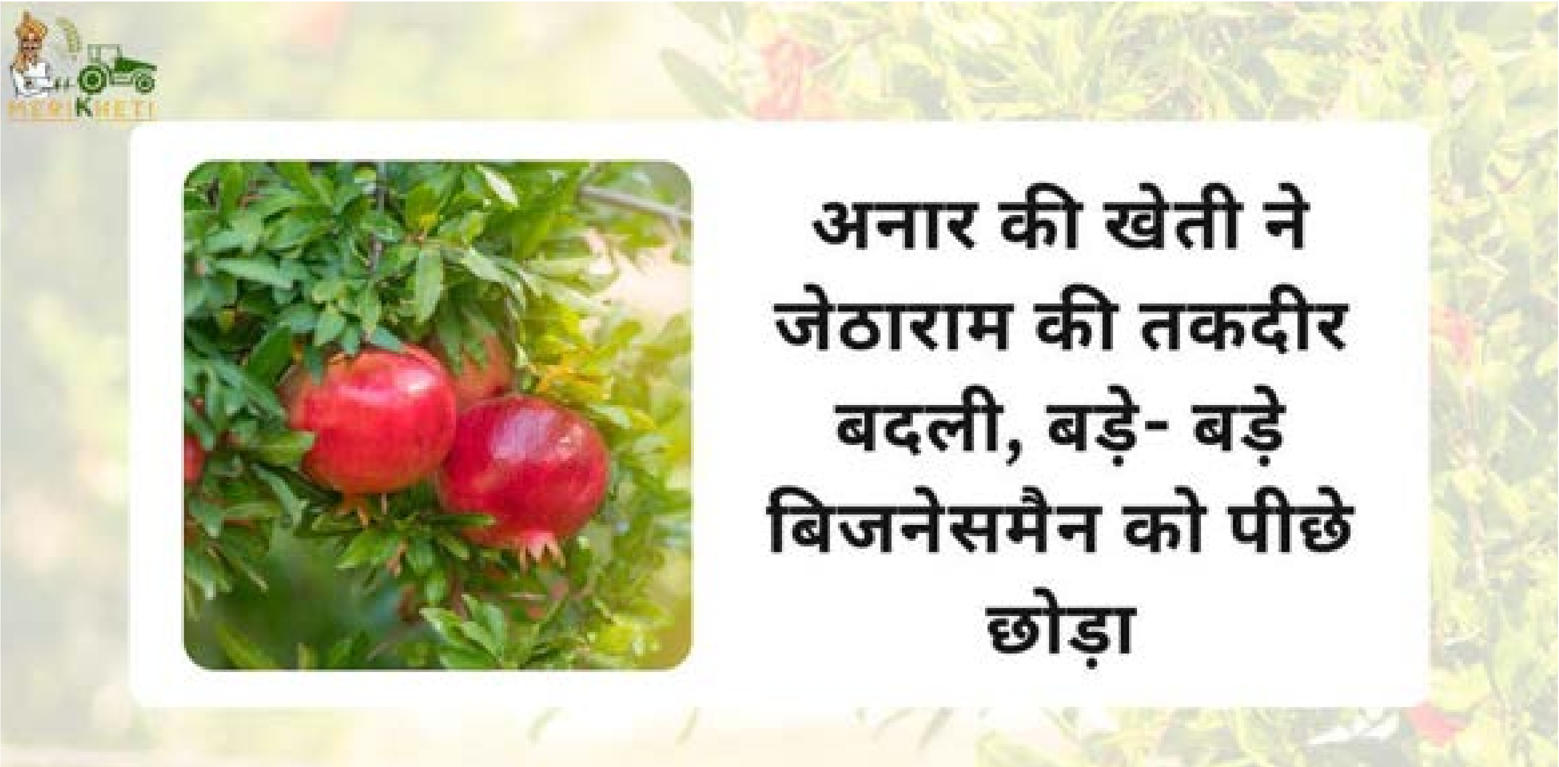

अनार की खेती ने जेठाराम की तकदीर बदली, बड़े- बड़े बिजनेसमैन को पीछे छोड़ा

किसान जेठाराम कोडेचा द्वारा उपजाए गए अनार की सप्लाई दिल्ली, अहमदाबाद, कलकत्ता, बेंगलुरु और मुंबई ही नहीं बल्कि बंग्लादेश में भी हो रही है। इससे वे साल में लाखों रुपये की कमाई कर रहे हैं।

ज्यादातर लोगों का कहना है, कि खेती- किसानी में अब लाभ नहीं रहा। लागत की तुलना में आमदनी बहुत कम हो गई है। बहुत बार तो उचित भाव नहीं मिलने पर किसानों को हानि हो जाती है। परंतु, परिश्रम और नवीन तकनीक के माध्यम से खेती की जाए, तो यही धरती सोना उगलने लगती है। बस इसके लिए आपको थोड़ा धीरज रखना होगा। आज हम राजस्थान के एक ऐसे किसान के बारे में बात करेंगे, जिन्होंने खेती से बड़े- बड़े व्यवसायियों को लोहा मनवा दिया है। वे खेती से ही लाखों रुपये की कमाई कर रहे हैं।

अनार की खेती ने बदली जेठाराम की किस्मत

बतादें, कि हम बाड़मेर जिला स्थित भीमडा गांव निवासी जेठाराम कोडेचा के विषय में बात कर रहे हैं। पहले वे पांपरिक फसलों की खेती करते थे, लेकिन इसमें उन्हें उतनी आमदनी नहीं होती थी। इसके उपरांत उन्होंने खेती करने का तरीका बदल दिया एवं बागवानी शुरू कर दी। वह वर्ष 2016 से अनार की खेती कर रहे हैं। इससे उनकी तकदीर चमक गई। उनके खेत में उगाए गए अनार की आपूर्ति महाराष्ट्र, कलकत्ता बांग्लादेश तक में हो रही है।

जेठाराम ने 15 लाख रुपये का लोन लेकर स्टार्टअप के रूप में अनार की खेती शुरू की थी

विशेष बात यह है, कि वर्ष 2016 में जेठाराम ने 15 लाख रुपये का लोन लेकर स्टार्टअप के रूप में अनार की खेती शुरू की थी। इसके लिए उन्होंने महाराष्ट्र के नाशिक से अनार की उन्नत किस्म के 4 हजार पौधे मंगवाए थे। इसके उपरांत कोडेचा ने पीछे मुड़कर नहीं देखा।

जेठाराम कोडेचा को इतनी आमदनी होती है

मुख्य बात यह है, कि जेठाराम कोडेचा पढ़े- लिखे नहीं है। वे अनपढ़ अंगूठा छाप किसान हैं। इसके होते हुए भी उन्होंने बड़े- बड़े बिजनेसमैन को खुद से पीछे छोड़ दिया है। वह अपने खेत में अनार की भगवा एवं सिंदूरी सरीखी उन्नत किस्मों की पैदावार कर रहे हैं। जेठाराम ने 45 बीघा भूमि में अनार की खेती कर रखी है। एक पौधे से 25 किलो अनार की पैदावार होती है। जेठाराम की मानें तो अनार की खेती चालू करने के एक साल के उपरांत से आमदनी होने लगी। अनार बेचकर दूसरे वर्ष उन्होंने 7 लाख रुपये की आमदनी की थी। इसी प्रकार तीसरे वर्ष 15 लाख, चौथे साल 25 लाख, पांचवें साल अनार से उन्हें 35 लाख रुपये की आमदनी हुई। वह कहते हैं, कि अभी तक अनार बेचकर वह 80 लाख रुपये की आमदनी कर चुके हैं।

किसान कुलविंदर परंपरागत खेती की बजाए खरबूजे की खेती शुरू कर बना मालामाल

पंजाब के इस किसान ने अपने घर की परंपरागत खेती छोड़कर खरबूज की खेती करना शुरू किया है। आज वह लोगों के लिए एक नजीर बन चुके हैं। पंजाब के मानसा जनपद के रहने वाले एस. कुलविंदर सिंह ने अपनी बीए की पढाई समाप्त करने के उपरांत खेती करने के बारे में सोचा। उन्होंने पारंपरिक खेती को छोड़ खरबूजे की खेती चालू की और आज उनका खरबूजे का व्यवसाय एक बड़े पैमाने पर पहुंच गया है।

कृषि की तकनीक के विषय में जाना

आपको बतादें, कि शुरुआती दौर में कुलविंदर सिंह पारंपरिक फसलों का ही उत्पादन किया करते थे। परंतु, वक्त के साथ उन्होंने विगत 6-7 वर्षों से सब्जी की खेती की तरफ अपना रुख किया। इसके पश्चात उन्होंने खरबूजे की खेती आरंभ की। खरबूज की खेती के संबंध में बहुत सारी तकनीकी जानकारियां वह कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना के विशेषज्ञों और प्रगतिशील किसानों के जरिए से लिया करते थे।

पारंपरिक फसलों के मुकाबले अधिक फायदा मिला

कुलविंदर ने सर्वप्रथम वर्ष 2021 में अपने एक एकड़ के खेत में खरबूजे की खेती आरंभ की। तरबूज की खेती की शुरुआत में उन्हें बहुत सारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इस फसल में कभी पीला धब्बा रोग तो कभी फल मक्खी का आकस्मिक आक्रमण हो जाता था। हालांकि, इन चुनौतियों के बावजूद भी खरबूजे की खेती से उनको पारंपरिक फसलों के मुकाबले अधिक मुनाफा मिला। इस वजह से उन्होंने खरबूजे की खेती को सुचारू रखने का सोचा। प्रथम बार के कड़वे अनुभव के उपरांत उनको दूसरी बार बेहद अच्छी सफलता अर्जित हुई।

कृषि विशेषज्ञों की सलाहनुसार ही किया उत्पादन

वह आज खरबूज की खेती आधा एकड़ से चालू कर अपने 17 एकड़ की कुल भूमि पर आधुनिक तकनीक अपनाकर खेती कर लोगों के सामने सफलता की एक कहानी रच दी। इसके चलते उन्होंने पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना द्वारा निर्मित पीएयू फल मक्खी जाल का उपयोग किया और पीले धब्बे की बीमारी को नियंत्रण के लिए प्रचंड सिंचाई से दूरी बनाई। वह वक्त-वक्त पर अपनी उपज को बेहतर करने के लिए कृषि विज्ञान केंद्र के विशेषज्ञों से सलाह भी लेते रहते हैं।

कुलविंदर खरबूज की खेती से मोटा मुनाफा उठा रहे हैं

कुलविंदर ने अपने गांव में खरबूजे की अच्छी मार्केटिंग के लिए समीपवर्ती गांवों के किसानों को भी खरबूजे की खेती करने के लिए बढ़ोत्तरी की। खरबूजे की खेती का रकबा अच्छा होने की वजह से व्यापारी सीधे उनके खेतों से फसल की खरीदारी करने लगे और सभी कृषकों को आमदनी भी अच्छी होने लगी। कुलविंदर के मुताबिक, आज वह खरबूजे की खेती से प्रति एकड़ 80 से 90 हजार रुपये की आमदनी कर रहे हैं।

किसान श्रवण सिंह बागवानी फसलों का उत्पादन कर बने मालामाल

किसान श्रवण सिंह बागवानी फसलों का उत्पादन कर बने मालामाल

किसान श्रवण सिंह के बगीचे में 5 हजार अनार के पेड़ हैं। बतादें कि लगभग इतने ही पेड़ उन्होंने अपने भाई के फॉर्म हाउस में लगाए हैं। इसके अतिरिक्त वे ताइवान पिंक अमरूद, केसर आम की एक विशेष किस्म की भी खेती कर रहे हैं। वह सभी फसलों की खेती जैविक विधि के माध्यम से करते हैं।

वर्तमान में राजस्थान में किसान पारंपरिक खेती करने की जगह बागवानी में अधिक परिश्रम कर रहे हैं। इससे यहां के किसान बागवानी से फिलहाल खुशहाल हो गए हैं। उनकी कमाई लाखों में हो रही है। आज हम राजस्थान के एक ऐसे किसान के विषय में बात करेंगे जो चीकू, खीरे, नींबू, आम और अनार की खेती से साल में 40 लाख रुपये की आय कर रहा है। विशेष बात यह है, कि इस किसान द्वारा उगाए गए अनार की माँग विदेशों तक में है।

श्रवण सिंह एक पढ़े-लिखे ग्रेजुएट किसान हैं

दरअसल, हम बात कर रहे हैं राजस्थान के सिरोही जनपद के रहने वाले किसान श्रवण सिंह के विषय में। श्रवण सिंह पढ़े- लिखे ग्रेजुएट किसान हैं। पहले वह रेडीमेड कपड़ों का व्यवसाय करते थे। परंतु, इस व्यवसाय में उनका मन नहीं लग रहा है। अब ऐसी स्थिति में श्रवण सिंह ने बागवानी करने का निर्णय लिया। वे आधुनिक विधि के माध्यम से चीकू, खेरी, नींबू, आम और सिंदूरी अनार की खेती कर रहे हैं। इससे उन्हें वार्षिक 40 लाख रुपये की आमदनी हो रही है।

अंगूर की खेती पर प्रयोग चल रहा है

वर्तमान में श्रवण सिंह अंगूर के ऊपर भी प्रयोग कर रहे हैं। उनका कहना है, कि अनार, नींबू, और अमरूद की बिक्री करके वह साल में 40 लाख रुपये की कमाई कर लेते हैं।

नींबू की खेती इतने हेक्टेयर रकबे में शुरू की गई

श्रवण सिंह के कहने के अनुसार पहले उन्होंने बागवानी की शुरुआत क्रॉप पपीते से की थी। इसमें उन्हें काफी मोटा मुनाफा प्राप्त हुआ। ऐसे में वह आहिस्ते-आहिस्ते बागवानी का क्षेत्रफल बढ़ाते गए। ऐसे में उन्हें तीसरे वर्ष से 18 लाख रुपये की आय होने लगी। इसके उपरांत उन्होंने वर्ष 2011 में 12 हेक्टेयर में नींबू की खेती चालू कर दी। उसके बाद साल 2013 से उन्होंने अनार के भी पौधे रोपने शुरू कर दिए। 2 साल के उपरांत से ही अनार का उत्पादन शुरू हो गया। श्रवण सिंह ने बताया है, कि वे अपने खेत में उगाए गए अनार की सप्लाई बांग्लादेश, नेपाल और दुबई में भी करते है। मुख्य बात यह है, कि लैब में जाँच होने के बाद उनके उत्पादों का निर्यात होता है। इसके अतिरिक्त वे रिलायंस फ्रेश, सुपरमार्केट एवं जैन इरीगेशन जैसी मल्टिनेशनल कंपनियों को भी फल सप्लाई करते हैं।

MERIKHETI

www.merikheti.com

Address: 5A-46, 6th Floor, Cloud9 Tower, Vaishali Sector 1, Ghaziabad – 201010